॥ तस्मै नमः श्री गुरु गौतमाय ॥

श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्वाद

वर्ष - 19 अंक - 3 जुलाई-सितम्बर 2024

नवनिर्मित शिव मन्दिर की एक झलक

गौतमाश्रम के लॉन वाले भाग का मनोरम दृश्य

गौतम सदन का अभिनव स्वरूप

महर्षि गौतम मंदिर

प्रकाशक :
श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति, पुष्कर, अजमेर (राज.)

प्रबन्ध समिति भारतीय विद्या मन्दिर, पाली द्वारा संचालित

प्रेरक

स्व. श्रीमती शान्तिदेवी जोशी

कृष्णा इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एवं इंजीनियरिंग (पॉलिटेक्निक कॉलेज)

प्रेरक

स्व. रवीन्द्र जोशी

त्रिवर्षीय इंजीनियरिंग डिप्लोमा

सिविल | मैकेनिकल | इलेक्ट्रीकल

प्रवेश योग्यता : प्रथम वर्ष : कक्षा 10 वीं उत्तीर्ण द्वितीय वर्ष : कक्षा 12 वीं (विज्ञान-गणित अथवा द्विवर्षीय आई. टी. आई)

भारतीय विद्या मन्दिर महिला बी.एड.कॉलेज, पाली

रामदेव बी. एड्. कॉलेज, जैसलमेर

भारतीय विद्या मन्दिर बी.एस.टी.सी.कॉलेज, पाली

कृष्णा प्रा. आई. टी. आई.

चिमनपुरा, पाली (राज.) फोन : 02932 258441 मो. 92144 91774, 97841 98474

मारवाड़ प्रा.आई. टी. आई., मारवाड़ ज.

ट्रेड : इलेक्ट्रिशियन, वायरमैन, डिजल मैकेनिक, अवधि 2 वर्ष, प्रवेश योग्यता 10 वीं उत्तीर्ण

भारतीय विद्या मन्दिर उच्च माध्यमिक विद्यालय, पाली

भारतीय विद्यापीठ माध्यमिक विद्यालय, पाली

भारतेन्दु कॉलेज, पाली मारवाड़

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान शिक्षा विभाग भारत सरकार (NIOS) द्वारा संचालित 10 वीं एवं 12 वीं उत्तीर्ण करें।

मान्य विश्वविद्यालय द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम से बी. ए., बी. कॉम, एम. ए, एम. कॉम, एम. ए. (एज्यूकेशन) उत्तीर्ण करे।

गोरधन जोशी
प्रबन्ध निदेशक
87693 19941

सुनील जोशी
सचिव
92144 91774

हेमन्त जोशी
निदेशक
92143 76663

शुभम जोशी
उपाध्यक्ष
90010 81912

शिवम जोशी
समन्वयक
97841 98474

सीताराम जोशी
अध्यक्ष
98757 26002

कृष्णा कॉलेज, राम नगर, पाली

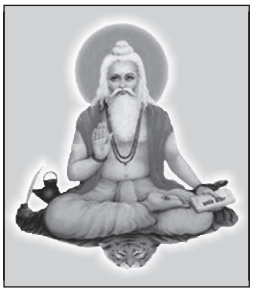

।। तस्मै नमः श्री गुरु गौतमाय ।।

श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्वाद

आश्रम दूरभाष : 0145-2772112,

व्हाटसेप नं. 9352796455

श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति का त्रैमासिक मुखपत्र

(सदस्यों में निःशुल्क प्रसारण)

वर्ष - 19 अंक - 3 जुलाई - सितम्बर 2024

E-mail : gautamashrampushkar@gmail.com Web : www.gautamashrampushkar.com

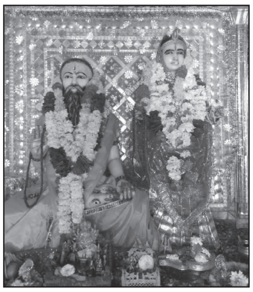

संरक्षक :
सीताराम जोशी
पाली
9414590841
9875726002

परामर्श :
मोहनराज उपाध्याय
लाम्पोलाई
9414119195
7665019195

प्रबन्धन :
बालकृष्ण शर्मा
अजमेर
9413345016

सम्पादक :
शिवराज चाष्टा
अजमेर
9414284277

सह-सम्पादक :
देवराज शर्मा
पाली
9461717418

उप-सम्पादक :
सन्दीप जोशी
अजमेर
9251477334
9001195241

सम्पादकीय......

सम्मानित ट्रस्टीगण तथा पाठक बन्धु ,

सादर वन्देमातरम्

श्री पुष्कर गौतमाश्रम संवाद पत्रिका का उन्नीसवें वर्ष का यह तीसरा अंक आप सभी पाठक बन्धुओं के पठनार्थ प्रस्तुत है। अंक में श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्बन्धी गत तीन माह की उपलब्धियों तथा गतिविधियों के अतिरिक्त वित्तीय वर्ष 2023-24 का श्री पुष्कर गौतमाश्रम का चार्टर्ड अकाउंटेंट से आडिट किये हुए लेखा एवं बैलेंस शीट का भी प्रस्तुतिकरण किया गया है जो गौतमाश्रम की आर्थिक स्थिति और वर्ष भर में किए गए कार्य कलापों का चित्र प्रस्तुत करता है।पाठक बन्धु श्री पुष्कर गौतमाश्रम की सुदृढ होती हुई आर्थिक स्थिति का विवेचनात्मक अध्ययन कर अपनी प्रतिक्रिया से ट्रस्ट समिति को अवगत करा सकते हैं।

कई समाज बन्धुओं से निरन्तर यह शिकायत आती है कि उन्हें श्री पुष्कर गौतमाश्रम संवाद पत्रिका नहीं मिलती है।इसमें डाक विभाग की ही खामी हो सकती है अन्यथा गौतमाश्रम तो अपनी पता सूची के अनुसार सात रुपए के पोस्टेज स्टाम्प लगाकर निर्विवाद रूप से सभी को निःशुल्क पत्रिका भेज रहा है।पाठकों से आग्रह है कि वे इस सम्बन्ध में स्थानीय डाक विभाग से संपर्क कर समस्या का समाधान निकालें।विकल्प के तौर पर वे स्वयं के व्यय पर रजिस्टर्ड डाक अथवा कोरियर से पत्रिका मंगवा सकते हैं।

आगामी अवधि में आने वाले पर्वो गुरुपूर्णिमा , रक्षाबंधन तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की शुभकामना सहित।

भवदीय
शिवराज चाष्टा
सम्पादक

गौतमाश्रम समाचार............

श्री पुष्कर गौतमाश्रम की माह अप्रैल 2024 से जून 2024 की तीन माह अवधि की प्रमुख उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ न्यासी महानुभावों तथा समाज बन्धुओ की सूचनार्थ निम्न प्रकार है–

1. इन तीन महिनों की अवधि में कुल 10280 यात्रियों को आवासीय सुविधायें प्रदान की गई। जिसमें 136 यात्री बसों के यात्री भी सम्मलित है। इन 10280 यात्रियों में से 1115 यात्री हमारे समाज बन्धु थे एवं शेष 9165 अन्य समाज के थे। इन तीन महीनों की अवधि में 02 शादी समारोह एवं 01 गुर्जरगौड़ सामुहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन हुआ। जिससे आश्रम को 21,47,600/– की आय प्राप्त हुई है।

2. उपरोक्त अवधि में समाज बन्धुओं की ओर से विभिन्न मदों में 42,973/– राशि आश्रम विकास एवं भेंट सहयोग स्वरूप प्राप्त हुई है। इसमें 1000 व उससे ऊपर की राशि प्रदाताओं का विवरण निम्न प्रकार है :–

क्र.सं	दानदाता	निवास	राशि	मद
1	श्री किशन चन्द त्रिपाठी	भीलवाडा	5,100	विवाह के उपलक्ष में
2	श्री छीतरमल कलवाडिया	जयपुर	5,100	भेंट / सहयोग
3	श्री पुरूषोतम जी शर्मा	जहाजपुर	2,870	भेंट / सहयोग
4	श्री राकेश उपाध्याय	विजयनगर	2,100	भेंट / सहयोग
5	श्री सांवरलाल जी शर्मा	नसीराबाद	2,100	भेंट / सहयोग
6	श्रीमती चंदाबाई शर्मा	राताकोट	1,300	भेंट / सहयोग
7	श्री रमेश चन्द्र जी जोशी	सिंगावल	1,300	भेंट / सहयोग
8	श्री रमेश चन्द, सुरेश चन्द, हरिप्रकाश जोशी	पनोतिया	1,250	भेंट / सहयोग
9	श्री जवाहर जी उपाध्याय	जोधपुर	1,100	भेंट / सहयोग
10	श्री वेंक्टेश्वर प्रसाद शर्मा	अजमेर	1,100	गौतम जयंती सहयोग
11	श्री मूलचंद जी, जगदीश प्रसाद जी भारद्वाज	जयपुर	1,100	भेंट / सहयोग
12	श्री रामावतार जी, कमल जी	सूरत	1,100	भेंट / सहयोग
13	श्री प्रंशात जी जोशी	भांवता (अजमेर)	1,100	भेंट / सहयोग
14	श्री शान्ति लाल, वासुदेव चतूर्भुज रामस्वरूप जी तिवाड़ी	मेवडा	1,100	भेंट / सहयोग
15	श्री रामेश्वर जी उपाध्याय, संतोष उपाध्याय	जोधपुर	1,100	भेंट / सहयोग
16	श्री महावीर जी, नन्दलाल जी उपाध्याय	झीपियां	1,100	भेंट / सहयोग
17	श्री धर्मचन्द जी शर्मा	देवली	1,100	भेंट / सहयोग
18	श्री माणकचन्द जी, दिनंश चन्द जोशी	पीसांगन	1,100	विवाह के उपलक्ष में
19	श्री किशन जी, भूपेश जी जोशी	ब्यावर	1,100	विवाह के उपलक्ष में

3. श्री पुष्कर गौतम आश्रम की अनुपम योजना ''अन्नक्षेत्र स्थाई कोष'' के अन्तर्गत मार्च 2024 तक 444 समाज बन्धुओं ने इस योजना से जुडकर प्रत्येक ने दस हजार रूपये की राशि स्थाई कोष में जमा कराकर अपने पूर्वजों की पुण्य तिथि व अन्य उपलक्ष में प्रतिवर्ष नियत तिथि पर छात्रावासी विप्र बटुकों के भोजन के माध्यम से श्रद्धासुमन अर्पित किये जाने अथवा स्मरण किये जाने हेतु इस योजना में भाग लिया है। अप्रैल 2024 से जून 2024 की अवधि में 01 और समाज बन्धु ने इस योजना में भाग लिया है जिनका विवरण निम्न प्रकार है:–

अन्नक्षेत्र स्थाई कोष में जुड़ने वाले दानदाता

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति में	तिथि
1	श्री प्रशांत जोशी	नासिक	स्व. श्री राधाकिशन जी	आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या

4. उपरोक्त योजना के अन्तर्गत समाज बन्धुओं की ओर से बताई गई तिथि पर उनके प्रियजनों की स्मृति में गौतमाश्रम द्वारा छात्रावासी विप्र बटुकों को भोजन कराकर श्रद्धासुमन अर्पित किये जाते रहे हैं। माह अप्रैल 2024 से जून 2024 में आने वाली पुण्य तिथियों एवं जन्म उत्सव पर जिनका पुण्य स्मरण किया गया उनका पूर्ण विवरण निम्न प्रकार है:-

अप्रैल माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति/जन्म दिवस	तिथि
1	श्री सतीश जी, गिरीश जी जोशी	अष्टी महा.(नगर)	स्व. श्री विट्ठलदास जी उदेराम जी जोशी	चैत्र कृष्ण अष्टमी
2	श्री संदीप जी चौबे पुत्र श्री मिट्ठूलाल जी	भीलवाडा	स्व. श्रीमती सुशीला देवी चौबे	चैत्र कृष्ण अष्टमी
3	श्री के.सी शर्मा जी	भोपाल	स्व. श्रीमती उर्मिला त्रिपाठी	चैत्र कृष्ण अष्टमी
4	श्री कैलाशचन्द जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. श्रीमती उर्मिला त्रिपाठी	चैत्र कृष्ण अष्टमी
5	श्री धरनीधर जी तिवाड़ी पुत्र प्रशान्त, निशान्त	उदयपुर	स्व. श्रीमती मूली बाई पत्नी श्री मोती लाल जी तिवाड़ी	चैत्र कृष्ण दशमी
6	श्रीमती संतोष देवी पत्नी श्री राधेश्याम शर्मा	राजसमन्द	जन्म दिवस के उपलक्ष में	चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी
7	श्रीमती राधा मोहन जी शर्मा	बूंदी	स्व. श्री गोपीलाल जी शर्मा एवं श्रीमती गंगा देवी	चैत्र कृष्ण एकादशी
8	श्रीमती कृष्णा शर्मा	भीलवाडा	स्व. श्रीमती शान्ता देवी शर्मा	चैत्र कृष्ण अमावस्या
9	श्री बालाप्रसाद पूरणमल जी तिवाड़ी	पूना	स्व. श्रीमती पार्वती बाई	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
10	श्री संतोष जी, अशोक जी, गोपी जी कलवाडिया	सुजानगढ़	श्री लखमीचंद कमला देवी की प्रेरणा से	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
11	श्री विद्याधर जी चौबे	पुर-भीलवाड़ा	स्वेच्छा से	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
12	श्री कृष्णवल्लभ जी शर्मा	ब्यावर	माताजी श्रीमती पार्वती देवी शर्मा	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
13	श्री सत्यनारायण जी भट्ट	भीलवाडा	स्व. श्रीमती गंगा बाई	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
14	श्री सतीश जी, विनोद जी उपाध्याय	आकोला	श्री मनीष कुमार जी उपाध्याय	चैत्र शुक्ल द्वितीया
15	श्री कैलाश जी महेश जी स्व. योगेश जी, लोकेश जी आचार्य	उदयपुर	स्व. श्रीमती बसन्ती देवी आचार्य	चैत्र शुक्ल द्वितीया
16	श्री रविकान्त जी व्यास	भीलवाडा	नवजात पुत्र	चैत्र शुक्ल तृतीया

17	श्रीमती सीता देवी शर्मा उपाध्याय	नाथद्वारा	स्व. श्री रामनिवास जी झाडोलिया उपाध्याय	चैत्र शुक्ल चतुर्थी
18	श्री मदनलाल जी उपाध्याय	औरंगाबाद	स्व. श्री अनिल कुमार, रामगोपाल जी उपाध्याय	चैत्र शुक्ल षष्ठी
19	श्री सत्यनारायण जी पंचारिया	खीनच जोधपुर	स्व. श्रीमती कमला देवी पत्नी आशकरण जी	चैत्र शुक्ल षष्ठी
20	श्री वेंक्टेश्वर प्रसाद जी, कैलाश चंद जी शर्मा	अजमेर	स्व. श्रीमती गुलाब देवी पत्नी श्री रामचंद्र जी व्यास	चैत्र शुक्ल सप्तमी
21	श्रीमती लता बालकृष्ण जी आचार्य	भोपाल	स्व. श्रीमती कुसुमलता प्रहलाद जी (चौधरी)	चैत्र शुक्ल सप्तमी
22	श्री गौतम शर्मा त्रिवेदी	हैदराबाद	स्व. श्री घेवरचन्द जी शंकर लाल जी त्रिवेदी	चैत्र शुक्ल सप्तमी
23	श्री ओमप्रकाश जी, अशोक कुमार जी उपाध्याय	सोलापुर	स्व. श्रीमती फूला बाई दगडू सेठ	चैत्र शुक्ल अष्टमी
24	श्रीमती रमा देवी उपाध्याय	भीलवाडा	स्व. सतीश कुमार जी बच्छ	चैत्र शुक्ल अष्टमी
25	श्री बद्रीनारायण जी शर्मा	भीलवाडा	स्व. श्री रघुनाथ जी शर्मा	चैत्र शुक्ल दशमी
26	श्री सुशील जी शर्मा	चितौड़	स्व. श्री देवी दत जी शर्मा	चैत्र शुक्ल दशमी
27	श्री दामोदर जी पुरुषोतम जी उपाध्याय	आकोला	स्व. श्री रामस्वरुप जी उपाध्याय	चैत्र शुक्ल एकादशी
28	श्री हनुमान प्रसाद जी पुत्र श्री गोपाल प्रसाद जी शर्मा	मालपुरा (टोंक)	स्व. श्रीमती दुर्गा देवी पत्नी स्व. श्री भवंरलाल जी	चैत्र शुक्ल त्रयोदशी
29	श्री चंद्रदत जी जोशी	अजमेर	स्व. श्री बद्रीलाल जी जोशी	चैत्र शुक्ल चतुर्दशी
30	श्री सुरेश चन्द्र जी जोशी	भीलवाडा	स्व. श्रीमती संतोष देवी	चैत्र शुक्ल चतुर्दशी
31	श्री श्यामसुन्दर जी व्यास	नागौर	स्व. श्रीमती सरजू देवी व्यास	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा
32	श्री लोकश जी पुत्र श्री कृष्णविलास जी शर्मा	देवली	श्रीमती बादाम देवी पत्नी श्री कृष्णविलास जी शर्मा	वैशाख कृष्ण द्वितीया
33	श्रीमती अनिता शर्मा पत्नी श्री लोकेश जी शर्मा	जयपुर	श्रीमती कमला देवी पत्नी श्री कृष्ण चंद्र जी	वैशाख कृष्ण चतुर्थी
34	श्री नितेश जी उपाध्याय पुत्र श्री प्रदीप जी उपाध्याय	मंगलम सिटी रतलाम	स्व. श्री बालकृष्ण जी उपाध्याय	वैशाख कृष्ण चतुर्थी
35	श्री नवीन गिरधारी लाल सिवाल रामगोपाल जी सिवाल	सोलापुर	स्व. श्री शिवकरण जी,	वैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी
36	श्री मदनलाल जी उपाध्याय	औरंगाबाद	स्व. श्रीमती कौशल्या देवी उपाध्याय	वैशाख कृष्ण सप्तमी
37	श्रीमती श्यामा शर्मा	उदयपुर	स्व. श्री रामनारायण जी तिवाड़ी	वैशाख कृष्ण सप्तमी

38	श्री श्याम जी शर्मा (Adv.) प्रदीप जी शर्मा, हेमेन्द्र जी शर्मा, दिलीप जी शर्मा	उदयपुर	स्व. श्री रामनारायण जी शर्मा	वैशाख कृष्ण सप्तमी
39	कुमारी शैलजा तिवाड़ी पुत्री श्री ज्ञानदत जी तिवाड़ी	दिल्ली	जन्मदिवस उपलक्ष्य पर	प्रतिवर्ष 22 अप्रैल
40	श्रीमती तृप्ति त्रिवेदी	सिकन्द्राबाद	जन्मोत्सव	प्रतिवर्ष 28 अप्रैल

मई माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

1	डॉ. श्री अशीम जी एवं नितीशा उपाध्याय	रतलाम	स्व. श्री प्रधुम्न जयन्ति लाल जी उपाध्याय	वैशाख कृष्ण अष्टमी
2	श्री रमाकान्त जी अमृत लाल जी शास्त्री	अजगरा	स्व. श्री बोदूराम जी बहन चांद बाई	वैशाख कृष्ण अष्टमी
3	श्री रामस्वरुप जी पंचारिया	अहमदाबाद	स्व. श्रीमती अल्का पुत्री आर.बी. पंचारियां	वैशाख कृष्ण नवमी
4	श्री गिरिजेश कुमार जी पुत्र शिवकुमार जी शास्त्री	पाली	स्व. श्रीमती सावित्री देवी पत्नी शिवकुमार जी शास्त्री	वैशाख कृष्ण नवमी
5	श्रीमती कमला देवी शर्मा	इंदौर	स्व. श्री मनोहर लाल हीरालाल जी चाष्टा	वैशाख कृष्ण दशमी
6	श्रीमती सीता देवी पत्नी स्व. बृजलाल जी नाराणिया	हैदराबाद	स्व. बृजलाल जी नाराणिया	वैशाख कृष्ण एकादशी
7	श्रीमती अनसूया तिवाड़ी पत्नी श्री मांगी लाल जी तिवाड़ी	जोधपुर	स्व. श्री रामेश्वर लाल जी तिवाड़ी	वैशाख कृष्ण एकादशी
8	श्री अमित जी एवं सुमित जी मुकुन्द सेठ	सोलापुर	स्व. श्री मुकुन्द जी दगडू सेठ उपाध्याय	वैशाख कृष्ण अमावस्या
9	श्री दामोदर लाल जी संदीप जी जोशी	जोधपुर	स्व. श्री बंशीधर जी जोशी	वैशाख कृष्ण अमावस्या
10	श्री नारायण लाल जी जोशी	पूना	स्व. श्री जयनारायण जी जोशी	वैशाख कृष्ण अमावस्या
11	श्रीमती बदामी देवी	भीलवाडा	स्व. श्री बद्रीनारायण जी शर्मा	वैशाख कृष्ण अमावस्या
12	श्री मूलचन्द जी शर्मा	जयपुर	स्व. श्रीमती दुर्गा शर्मा	वैशाख कृष्ण अमावस्या
13	श्रीमती सीता देवी शर्मा	नाथद्वारा	जन्मोत्सव के उपलक्ष में	7 मई
14	श्री नंदकिशोर जी मोतीलाल जी जोशी	बैंगलोर	स्व. श्रीमती अयोध्या बाई	वैशाख शुक्ल द्वितीया
15	श्री बालाप्रसाद जी पूरणमल जी तिवाड़ी	पूना	स्व. श्रीकान्त पूरणमल जी नारायण जी सोलापुर	वैशाख शुक्ल तृतीया
16	श्री बेगाराम जी सिंवाल	गंगानगर	स्वेच्छा से ब्राह्मण भोजन	वैशाख शुक्ल तृतीया

17	श्री सतीश जी गिरदावर	देवडूंगरी (किशनगढ़)	स्व. श्रीमती रामकन्या देवी	वैशाख शुक्ल तृतीया
18	श्रीमती ललितेश जी व्यास	अजमेर	स्व. श्री दयाशंकर जी शर्मा	वैशाख शुक्ल तृतीया
19	श्री विजय कुमार जी संजय कुमार जी तिवाड़ी	जलगांव–महाराष्ट्र	स्व. श्री भंवरलाल जी महकरण जी तिवाड़ी	वैशाख शुक्ल चतुर्थी
20	श्रीमती राधा देवी जोशी	चितौडगढ़	श्री बालमुकुन्द जी जोशी	वैशाख शुक्ल षष्ठी
21	श्री नरेश चन्द्र जी व्यास पुत्र श्री मुरलीधर जी	भीलवाड़ा	स्व. श्री मुरलीधर जी व्यास	वैशाख शुक्ल सप्तमी
22	श्री चंद्रकिशोर जी, केवल किशोर जी, राजेन्द्र कुमार जी, नरेन्द्र कुमार जी पुत्र श्री चंद्रशेखर जी तिवाड़ी	ब्यावर	स्व. श्रीमती चांद कंवर पत्नी श्री चंद्रशेखर जी	वैशाख शुक्ल सप्तमी
23	श्री सीताराम जी उपाध्याय एवं परिवार	जसवंतगढ़	स्व. श्री झूमर मल जी उपाध्याय	वैशाख शुक्ल अष्टमी
24	श्रीमती श्यामा देवी जोशी	प्रतापगढ़	स्व. श्री गोपाल जी जोशी	वैशाख शुक्ल एकादशी
25	श्री सीताराम जी जोशी	पाली	स्व. श्री गिरधारी लाल जी जोशी	वैशाख शुक्ल द्वादशी
26	श्री जुगल किशोर जी, सत्यनारायण जी, मोहनराज जी उपाध्याय	लाम्पोलाई–मेडता	स्व. श्री गणपतलाल जी पंचारिया	वैशाख शुक्ल त्रयोदशी
27	श्री कैलाश जी जाजड़ा	किशनगढ	स्व. श्रीमती भंवरी देवी	वैशाख शुक्ल चतुर्दशी
28	श्री मोहनलाल जी शर्मा	दलिया तह. डीडवाणा, (नागौर)	स्व. श्री विनोद कुमार जी उपाध्याय	वैशाख शुक्ल चतुर्दशी
29	श्री नन्दलाल जी एवं पुत्र श्री विष्णु दत्त जी	रामसर नसीराबाद	स्व. राजेन्द्र कुमार जी चौबे	वैशाख शुक्ल चतुर्दशी
30	श्री सुरेश चन्द्र जी जोशी	भीलवाड़ा	स्व. श्री इन्द्र जी रमेश जी	वैशाख शुक्ल पूर्णिमा
31	श्रीमती सुमन व्यास	भीलवाड़ा	स्व. श्री शिवदत्त जी जोशी	वैशाख शुक्ल पूर्णिमा
32	श्री राजेश कुमार जी, मनोज कुमार जी, दिनेश कुमार जी गौतम	पुष्कर	स्व. श्रीमती शान्ति देवी पत्नी श्री सावित्री प्रसाद जी गौतम	ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा
33	श्री शिवभगवान जी, रमेश कुमार जी कलवाड़िया (जोशी)	सुजानगढ़ हाल मुम्बई	स्व. श्रीमती दया देवी (उमा)	ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा
34	श्री चंद्रदत जी जोशी	अजमेर	स्व. श्रीमती सोनी बाई पत्नी स्व. श्री बद्री लाल जी	ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया
35	श्री रविकान्त जी व्यास	भीलवाड़ा	नवजात पुत्र	ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया
36	श्री रामावतार उपाध्याय	मुम्बई	स्व. श्रीमती लता देवी उपाध्याय पत्नी श्री गोरीशंकर जी उपाध्याय	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्थी
37	श्री मुरलीधर जी द्विवेदी	संगमनेर	स्व. श्रीमती शांता बाई मदन लाल जी उपाध्याय	ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी

38	श्री ओमप्रकाश जी शर्मा मूलचंद जी चौबे	नीमच	स्व. श्रीमती कस्तूरी बाई पत्नी श्री मूलचंद जी चौबे	ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी
39	श्रीमती सुमन व्यास	भीलवाड़ा	स्व. श्री सुरेश चन्द्र जी जोशी	ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी
40	श्रीमती मंजू प्रभा जोशी पत्नी श्री कैलाश चन्द जी जोशी	अजमेर	स्व. श्रीमती नाथी देवी	ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी
41	श्री बालाप्रसाद जी पूरणमल जी तिवाड़ी	पूना	स्व. श्री पूरणमल नारायण प्रसाद जी तिवाड़ी	ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी
42	श्री रमेश माया जी व्यास	चितौड़गढ़	स्व. श्रीमती कमला देवी पत्नी स्व. श्री शान्ति लाल जी	ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी
43	श्रीमती उषा शर्मा	नाना खेड़ा-उज्जैन	स्व. श्री योगेन्द्र मोहन जी	ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी

जून माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

1	डा. राकेश जी, मुकेश जी दुबे	अजमेर	स्व. श्री भास्कर दुबे	ज्येष्ठ कृष्ण नवमी
2	श्री जुगल किशोर जी तिवाड़ी	डोम्बीवली वेस्ट थाने	स्व. श्रीमती प्रभावती	ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी
3	स्व. रामस्वरूप जी उपाध्याय परिवार	आकोला लाम्पोलाई	स्व. श्री रामगोपाल जी उपाध्याय	ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी
4	श्रीमती शारदा देवी शर्मा पत्नी श्रीधर जी शर्मा	मसूदा (अजमेर)	जन्मोत्सव के उपलक्ष में	3 जून प्रतिवर्ष
5	श्री घनश्याम जी जोशी	जोधपुर	स्व. श्री रामकिशन जी जोशी	ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी
6	श्री राजेन्द प्रसाद जी जोशी	किशनगढ	स्व. श्री परमानंद जी जोशी	ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी
7	श्री श्रीधर जी शर्मा पुत्र श्री गंगाराम जी पंचोली	मसूदा (अजमेर)	जन्मोत्सव के उपलक्ष में	5 जून प्रतिवर्ष
8	श्री ओमप्रकाश जी तिवाड़ी	सोलापुर	स्व. श्री मनमोहन जी तिवाड़ी	ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी
9	श्री चंद्रकिशोर जी, केवल किशोर जी, राजेन्द्र कुमार जी, नरेन्द्र कुमार जी पुत्र श्री चंद्रशेखर जी तिवाड़ी	ब्यावर	स्व. श्रीमती केसर बाई	ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी
10	श्री भीकमचंद जी शशि कुमार जी पंचोली	बडौदरा	स्व. श्री किशनलाल जी पंचोली	ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या
11	श्रीमती चंद्रकान्ता जी डॉ. अनिल जी उपाध्याय	जोधपुर	स्व. श्री रामजीवन जी उपाध्याय	ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या
12	श्री लक्ष्मी नारायण जी उपाध्याय (ट्रस्टी)	रेसुन्दा-भीलवाड़ा	स्व. श्रीमती भूरी बाई	ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या
13	श्री मोहनलाल जी जोशी	इन्दौर	स्व. गोपीकिशन जी जोशी	ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या
14	श्री अनिल जी शर्मा	अजमेर	स्व. श्री विश्वेश्वर जी गील	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा

15	श्री नन्द किशोर जी तिवाड़ी	अजमेर	स्व. श्रीमती मंजू तिवाड़ी	ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया
16	डा. राकेश जी दुबे, मुकेश जी दुबे	अजमेर	स्व. श्री सत्य प्रकाश जी दुबे	ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी
17	श्री वेदप्रकाश जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. कौशल्या देवी त्रिपाठी	ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी
18	श्री रामस्वरुप जी उपाध्याय	जलगांव	धर्मपत्नी स्व. श्रीमती विमला बाई	ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी
19	श्री कीर्तिकुमार जी शर्मा (भारद्वाज)	रतलाम	स्व. श्री कृष्ण वल्लभ जी शर्मा	ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी
20	श्री नारायण लाल जी जयनारायण जी जोशी	पूना	स्व. श्रीमती अमरी देवी जोशी	ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी
21	श्री रमेश माया जी व्यास	चितौड़गढ़	स्व. श्रीमती कस्तूरी देवी व्यास पत्नी श्री नरेन्द्र कुमार जी व्यास	ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी
22	श्री कैलाश जी, महेश जी, लोकेश जी आचार्य	उदयपुर	स्व. श्री कन्हैया लाल जी आचार्य	ज्येष्ठ शुक्ल नवमी
23	श्रीमती कस्तूरी बाई एवं पुत्र मदन मोहन जी	राजसमंद	स्व. वैद्य श्री श्यामसुन्दर जी त्रिपाठी	ज्येष्ठ शुक्ल दशमी
24	श्री चन्द्र दत्त जी जोशी	अजमेर	स्व. श्रीमती सीता देवी	ज्येष्ठ शुक्ल दशमी
25	श्री नरेन्द्र कुमार जी, रवि कुमार जी शर्मा	अजमेर	स्व. श्री देवकीनन्दन जी शर्मा	ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी
26	श्रीमती शान्ति देवी पत्नी श्री सावित्री प्रसाद जी गौतम	पुष्कर	स्व. श्री गोवर्धन जी सिंवाल	ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी
27	श्री सुरेश जी, रमेश जी, दिनेश जी तिवाड़ी	ब्यावर	स्व. श्री गोपाल जी तिवाड़ी	ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी
28	श्रीमती गायत्री देवी उपाध्याय	अजमेर	स्व. श्री रमेश चंद जी उपाध्याय	ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी
29	श्री आलोक कुमार जी शर्मा	किशनगढ	जन्मोत्सव पर माताश्री श्रीमती रामकन्या शर्मा	ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी
30	श्री रामेश्वर लाल जी पंचारिया	बैंगलोर	स्व. श्रीमती लक्ष्मीबाई जयनारायण जी पंचारिया	ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी
31	श्रीमती श्यामा शर्मा	अजमेर	स्व. श्री रामगोपाल जी त्रिपाठी पण्डा	ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी
32	कुमारी शैलजा तिवाड़ी	दिल्ली	स्व. श्री ज्ञानदत जी तिवाड़ी	प्रति वर्ष 23 जून
33	श्रीमती गीता देवी व प्रभु, केके जोशी	तिहारी-अजमेर	स्व. श्री शिव दत्त जी जोशी	आषाढ़ कृष्ण द्वितीया
34	श्री उम्मेदमल जी राजाराम जी उपाध्याय	पीलवा	स्व. श्री श्रीलाल जी केदार मल जी उपाध्याय	आषाढ़ कृष्ण पंचमी
35	श्री राधेश्याम जी शर्मा	जयपुर	स्व. श्रीमती बसन्ती देवी पत्नी गोकुल चद जी	आषाढ़ कृष्ण पंचमी
36	श्री आलोक कुमार जी	किशनगढ	स्व. श्री राधेश्याम जी	आषाढ़ कृष्ण पंचमी
37	श्रीमती शारदा देवी चाष्टा	अजमेर	स्व. श्री गणपत लाल जी चाष्टा	आषाढ़ कृष्ण षष्ठी

श्री पुष्कर गौतमाश्रम का वित्तिय वर्ष 2023-24 का लेखा जोखा

SHRI PUSHKAR GAUTAM ASHRAM TRUST SAMITI
PUSHKAR
INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31st MARCH 2024

(In Rs.)

EXPENDITURE	AMOUNT	INCOME		AMOUNT
Audit / Tax Fee	14,750	**Voluntary Contribution :**		
Bank Charges	2,000	Building Receipts		90,72,838
Exp. on Cleaning	1,70,130	Kartik Purnima Income		2,37,304
Exp. on Kartik Purnima	2,49,703	Donation Received		1,49,186
Exp. on CCTV	1,29,600	Contribution Tent House		2,36,550
Building Repairs & Painting Exp.	27,76,594	Samvad Receipt		32,200
Newspaper Exp	1,870	Misc. Income		70,978
Postage	6,770	Bhojnalya		1,82,787
Printing & Stationary	44,305	Linen Receipts		5,13,450
Electricity Water Repairing	1,93,035	Cleaning Receipts		92,500
Electricity Exp.	12,51,992	Electric Receipt		51,100
Shiv Puran Exp	1,44,663	Utensils Receipts		75,666
Shiv/Gautam Temple Exp	4,46,989	Generator Receipt		28,246
AC Service Exp.	31,800	Interest Income (FDR)		
Fire Safety Exp	6,405	Annkshetra	2,93,850	
Website Exp.	18,750	Ashram	4,42,292	7,36,142
Ashram Exp.	1,89,032	S.B. Interest		40,178
Washing Exp.	56,794			
Telephone Exp.	17,358			
Travelling Exp.	12,638			
Water Exp.	8,740			
Bhojnalaya Exp.	3,97,011			
Bonus Expense	1,27,850			
Locker Rent	2,950			
Salaries	16,09,780			
Lawn Expense	50,745			
Festival Exp.	11,110			
Computer Exp	3,110			
Meeting Exp.	58,302			
Lift Exp.	36,690			
Generator Exp.	56,026			
Legal Exp.	11,800			
Samvad Exp.	1,88,760			
Depreciation	30,78,011			
Provision for Exp.	82,296			
Excess of Income over Expenditure	**30,766**			
TOTAL	**1,15,19,125**	**TOTAL**		**1,15,19,125**

NOTES ON ACCOUNTS : SCHEDULE - 2 :

AS PER OUR AUDIT REPORT OF EVEN DATE.

FOR SANJEEV KUMAR JAIN & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
F.R. No. 006114C

(SANJEEV KUMAR JAIN)
PROPRIETOR.
M. No. 074660.
UDIN - 24074660BKERIZ4333
AJMER, DATED 28-06-2024

Sanjeev Kumar Jain & Co. Chartered Accountants AJMER 305001

FOR SHRI PUSHKAR GAUTAM ASHRAM TRUST SAMITI

(BAL KRISHAN SHARMA) **MAHAMANTRI**

(BHANWAR LAL JOSHI) **TREASURER**

SHRI PUSHKAR GAUTAM ASHRAM TRUST SAMITI
PUSHKAR
BALANCE SHEET
AS AT 31st MARCH, 2024

(In Rs.)

LIABILITIES		AMOUNT
General Fund :		
Ashram Fund		3,61,70,660
Opening Balance	3,61,39,894	
Add : Excess of Income over Expenditure	30,766	
Corpus Funds		
Ashram Corpus Fund		30,42,100
Opening Balance	20,88,100	
Add : This year	9,54,000	
Ashram Dhruv Fund		62,64,803
Opening Balance	60,64,803	
Add : This year	2,00,000	
Ashram Development Fund		1,04,90,715
Opening Balance	91,10,115	
Add : This year	13,80,600	
Students Welfare Dhruv Fund		2,94,921
Opening Balance	2,94,921	
Add : This year	-	
Education Fund		7,33,800
Opening Balance	6,13,000	
Add : This year	1,20,800	
Samaroh Fund		3,17,000
Opening Balance	2,94,000	
Add : This year	23,000	
Annshetra Dhruv Fund		46,14,252
Opening Balance	44,14,252	
Add : This Year	2,00,000	
Group Marriage Fund		1,45,036
Opening Balance	1,45,036	
Less: This Year	-	
Current Liabilities :		
Building Reservation Deposit		15,49,714
Opening Balance	22,66,002	
Add : This year	50,26,224	
Less: Refund	57,42,512	
Caution Money :		25,500
Opening Balance	16,500	
Add: This Year	9,000	
Less: This Year	-	
Security Deposit		60,000
TDS Payble		2,440
Expenses Payable		82,296
TOTAL		**6,57,93,237**

ASSETS		AMOUNT
Fixed Assets		
As per Schedule : 1 :		5,25,38,429
Other Current Assets		
AVVNL (Security)		68,172
TDS Receivable 2021-22		11,766
TDS Receivable 2022-23		44,619
TDS Receivable 2023-24		72,240
Advance A/c		5,00,000
Closing Balance		
F.D.R. - Annshetra	43,92,528	
F.D.R. - Asharam	74,28,200	
Cash	43,883	
P.N.B.	1,22,639	
P.N.B. (U.P.I.)	3,76,103	
S.B.I	1,94,658	1,25,58,011
TOTAL		**6,57,93,237**

NOTES ON ACCOUNTS : SCHEDULE - 2 :

AS PER OUR AUDIT REPORT OF EVEN DATE.

FOR SANJEEV KUMAR JAIN & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
F.R. No. 006114C

Sanjeev Kumar Jain & Co. Chartered Accountants AJMER 305001

(SANJEEV KUMAR JAIN)
PROPRIETOR.
M. No. 074660.
UDIN - 24074660BKERIZ4333
AJMER, DATED 28-06-2024

FOR SHRI PUSHKAR GAUTAM ASHRAM TRUST SAMITI

(BAL KRISHAN SHARMA)
MAHAMANTRI

(BHANWAR LAL JOSHI)
TREASURER

SHRI PUSHKAR GAUTAM ASHRAM TRUST SAMITI
PUSHKAR

FINANCIAL YEAR : 2023-24

SCHEDULE : 1 : FIXED ASSETS

PARTICULARS	RATE OF DEP. %	AS AT 01-04-2023	ADDITION / DEDUCTION 01.04.23 to 30.09.23	ADDITION / DEDUCTION 01.10.23 to 31.03.24	TOTAL	DEP. 2023-2024	AS AT 31.03.2024
Land	0	29,33,504	-	-	29,33,504	-	29,33,504
Murti	0	700	-	-	700	-	700
Gold & Silver Jewellery	0	11,764	-	-	11,764	-	11,764
Building	5	4,26,54,335	29,07,514	-	4,55,61,849	22,78,092	4,32,83,757
Havan Kund	10	416	-	-	416	42	374
Mandir Gumbad	10	83,037	-	-	83,037	8,304	74,733
Air Conditioners	10	18,43,716	-	-	18,43,716	1,84,372	16,59,344
Refrigerator	10	6,089	-	-	6,089	609	5,480
Furniture	10	17,80,938	-	-	17,80,938	1,78,094	16,02,844
Water Cooler	10	67,582		-	67,582	6,758	60,824
Desert Cooler	10	94,050	-	-	94,050	9,405	84,645
Geyser	10	2,57,219	-	32,400	2,89,619	27,342	2,62,277
Fans	10	82,941	1,790	14,040	98,771	9,175	89,596
Elevator	10	4,77,859	-	-	4,77,859	47,786	4,30,073
Tubelight	10	19,610	-	-	19,610	1,961	17,649
Wheel Chair	10		5,999		5,999	600	5,399
Steel Door	10	-	-	47,110	47,110	2,356	44,754
Jaali Door	10		-	1,52,685	1,52,685	7,634	1,45,051
Weighing Machine	15	-	1,425	-	1,425	214	1,211
Utensils	15	44,550	14,833	29,690	89,073	11,134	77,939
Almirah	15	53,847	-	-	53,847	8,077	45,770
Bicycle	15	927	-	-	927	139	788
Steel Box	15	2,088	-	-	2,088	313	1,775
Linen & Dari	15	8,45,791	1,14,400	-	9,60,191	1,44,029	8,16,162
Mike Set	15	3,603	-	-	3,603	540	3,063
Aarti Set	15	879	-	-	879	132	747
Transformer	15	43,966	-	-	43,966	6,595	37,371
AC	15	-	57,969		57,969	8,695	49,274
CC TV Camera	15	83,187	-	-	83,187	12,478	70,709
Fire Equipment	15	12,177	-	-	12,177	1,827	10,350
Printer	15	6,655	-	-	6,655	998	5,657
Bike	15	24,847	-	-	24,847	3,727	21,120
Table Fan	15	732	-	-	732	110	622
Chapati Bhatti	15	2,796	-	-	2,796	419	2,377
Bati Oven	15	116	-	-	116	17	99
Road Bericher	15	5,103	-	-	5,103	765	4,338
Led TV	15	9,318	-	-	9,318	1,398	7,920
Dice	15	3,814	-	-	3,814	572	3,242
Dish TV	15	719	-	-	710	108	611
Capicitor	15	38,553	-	-	38,553	5,783	32,770
Battery	15	24,050	-	-	24,050	3,608	20,442
PBX Box	15	8,259	-	-	8,259	1,239	7,020
Generator	15	6,29,705	-	-	6,29,705	94,456	5,35,249
Electric Equipments (Cable)	15	27,882	-	48,551	76,433	7,824	68,609
Computer	40	710	-	-	710	284	426
TOTAL		5,21,88,034	31,03,930	3,24,476	5,56,16,440	30,78,011	5,25,38,429

Sanjeev Kumar Jain & Co.
CA
AJMER
305001
Chartered Accountants

'स्वस्तिक मंत्र तथा पवमान मंत्र'

उपरोक्त दोनों मंत्र दैनिक पूजा-पाठ में तथा विशिष्ट अवसरों पर आयोज्य अग्निहोत्र/यज्ञ आदि में साधारणतया प्रयुक्त होते हैं। सर्वसाधारण के ज्ञानार्थ प्रस्तुत हैं भावार्थ सहित दोनों मंत्र।

स्वस्तिक मंत्र

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

स्वस्तिक मंत्र, जो शुभता, कल्याण, और समृद्धि की कामना करता है, वैदिक अनुष्ठानों और पूजा के दौरान विशेष रूप से उच्चारित किया जाता है। इस मंत्र में विभिन्न देवताओं का आह्वान किया जाता है और उनसे मानवता और सृष्टि के कल्याण और सुरक्षा की प्रार्थना की जाती है। यह मंत्र विभिन्न अवसरों पर, जैसे कि गृह प्रवेश, विवाह, और अन्य शुभ कार्यक्रमों में उच्चारित किया जाता है।

मंत्र का अर्थ :-

1. **ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा :-** ''इन्द्र, जो वृद्धश्रवाः (व्यापक कीर्ति वाले) हैं, हमें शुभता प्रदान करें।'' इन्द्र देवता को शक्ति, साहस, और वीरता के लिए पुकारा जाता है।
2. **स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदा :-** ''पूषा, जो विश्व के ज्ञाता हैं, हमें शुभता प्रदान करें।'' पूषा सुरक्षा और मार्गदर्शन के देवता हैं।
3. **स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमि :-** ''तार्क्ष्य (गरुड़), जिनके चक्र अरिष्ट (निर्विघ्न) हैं, हमें शुभता प्रदान करें।'' गरुड़, विष्णु के वाहन, रक्षा और शक्ति के प्रतीक हैं।
4. **स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु :-** ''बृहस्पति, हमें शुभता प्रदान करें।'' बृहस्पति ज्ञान और शिक्षा के देवता हैं।

इस मंत्र का उद्देश्य समस्त सृष्टि में शांति, समृद्धि, और कल्याण की कामना करना है। यह मंत्र उन सभी देवताओं से आशीर्वाद मांगता है, जिनके पास विशेष शक्तियाँ और क्षमताएँ हैं, ताकि वे मानवता और सृष्टि को उनकी शक्तियों से आशीर्वादित करें। यह मंत्र सामान्य रूप से शुभ कार्यों की शुरुआत में या पूजा के दौरान उच्चारित किया जाता है, जिससे कि सभी कार्य निर्विघ्न और सफलतापूर्वक सम्पन्न हों।

पवमान मंत्र

''असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिगमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।''

पवमान मंत्र, जिसे अक्सर ''असतो मा सद्गमय'' के नाम से जाना जाता है, बृहदारण्यक उपनिषद् से आता है और यह एक गहन आध्यात्मिक यात्रा के लिए प्रार्थना करता है।

अर्थ और व्याख्या :

- **असतो मा सद्गमय :** ''मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो।'' यह भाग आध्यात्मिक जागरूकता और सत्य की खोज के लिए प्रार्थना करता है। यहाँ ''असत्य'' से तात्पर्य भ्रम और अज्ञान से है, जबकि ''सत्य'' आत्म-ज्ञान और उच्च चेतना के साथ संपर्क का प्रतीक है।
- **तमसो मा ज्योतिर्गमय :** ''मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।'' इस भाग में आंतरिक प्रकाश और ज्ञान की ओर मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की गई है, जहाँ ''तमस'' अज्ञानता और अंधकार को दर्शाता है और ''ज्योर्ति'' ज्ञान और प्रकाश का प्रतीक है।
- मृत्योर्मा अमृतं गमय :''मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।'' यहाँ प्रार्थना मृत्यु और नश्वरता के बंधन से मुक्ति और आत्मा की अमरता की ओर उन्नति के लिए की गई है। ''मृत्यु'' जीवन के नश्वर पहलू को दर्शाता है, जबकि ''अमृत'' आत्मा की अमरता और आध्यात्मिक मुक्ति का प्रतीक है।

पवमान मंत्र मानवता के लिए एक उच्च आध्यात्मिक अवस्था की कामना करता है, जहाँ व्यक्ति अज्ञानता, भ्रम, और नश्वरता से परे एक सत्य, प्रकाशित, और अमर अवस्था की ओर बढ़ता है। यह मंत्र न केवल व्यक्तिगत विकास और उत्थान के लिए, बल्कि समग्र मानवता के कल्याण और आध्यात्मिक प्रगति के लिए भी प्रार्थना करता है।

❑❑❑

निरन्तर विषयों का चिन्तन पतन का कारण

इन्द्रिय तथा विषयों के संयोग से उत्पन्न जितने भी भोग हैं, वे सब निश्चय ही दु:खयोनि हैं। यथार्थ बात तो यह है कि जब तक आपका यह विश्वास है कि जगत के पदार्थों में- भोगों में सुख है और जब तक उनके संग्रह को ही आप सुख का साधन मानते रहेंगे; तब तक आपको सच्चे सुख के दर्शन कदापि नहीं होंगे। अमुक-अमुक विषयों की प्राप्ति से, अमुक प्रकार की परिस्थिति से मुझको सुख हो जायगा, यह बहुत बड़ा भ्रम है, इसी भ्रम के कारण मनुष्य दिन-रात विषय-चिन्तन में लगा रहता है। आपको यह सत्य सदा याद रखना चाहिये कि समस्त पापों का मूल विषय-चिन्तन है। श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन ने भगवान् से पूछा था कि 'इच्छा न रहने पर भी ऐसा कौन है, जिसकी प्रेरणा से मुनष्य मानो बलपूर्वक लगाया हुआ- सा पाप करता है?' श्रीभगवान् ने इसके उत्तर में स्पष्ट बतलाया कि-

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।
(गीता 3/37)

काम (कामना) ही वह वैरी है, जो महाशन है- जिसकी कभी तृप्ति होती ही नहीं और जो महान् पापी है; यह काम ही क्रोध बनता है और इस काम की उत्पत्ति होती है रजोगुण से। रजोगुण रागात्मक है। अर्थात् आसक्ति ही रजोगुण का स्वरूप है। इस आसक्ति से ही काम की उत्पत्ति होती है और आसक्ति होती है विषयों के चिन्तन से, विषय-चिन्तन में मनुष्य का मन जहाँ रम जाता है, वहाँ एक के बाद दूसरा क्रमशः सारे दोष उत्पन्न हो जाते हैं और अन्त में उसका सर्वनाश होकर रहता है।

भगवान् ने कहा है-

ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात् सञ्जायते कामः कामात् क्रोधोअभिजायते।।
क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।।

मनुष्य मन से विषयों का चिन्तन करता है, विषय-चिन्तन से उसकी विषयों में आसक्ति होती है, आसक्ति से उनको प्राप्त करने की कामना उत्पन्न होती है, कामना में विघ्न पड़ने पर क्रोध (कामना के सफल होने पर लोभ) उत्पन्न होता है, क्रोध (या लोभ) से मूढ़ता आती है, मूढ़भाव से स्मरण शक्ति भ्रमित हो जाती है, स्मृति के भ्रंश होने पर बुद्धि मारी जाती है और बुद्धि के नाश हो जाने से मनुष्य का पतन या सर्वनाश हो जाता है।

इससे सिद्ध है कि समस्त पापों का और सर्वनाश का मूल विषय-चिन्तन है। यह विषय-चिन्तन तब तक नहीं छूटता, जब तक विषयों में सुख की प्राप्ति का भ्रम है। भगवान् तो कहते हैं-

ये हि संस्पर्शजा भोगा दु:खयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः।।

इन्द्रिय तथा विषयों के संयोग से उत्पन्न जितने भी भोग हैं, वे सब निश्चय ही दु:खयोनि हैं- दु:खों की उत्पत्ति के स्थान हैं और आदि अन्त वाले-अनित्य हैं, अतएव हे अर्जुन ! बुद्धिमान् पुरुष इनमें नहीं रमता-सुख नहीं मानता।'

सच्चे अक्षय सुख का उपभोग तो उस भगवत्-रूप योग में युक्त पुरुष को प्राप्त होता है, जिसका अन्त:करण बाह्य जागतिक विषय-भोगों में आसक्त नहीं है और जो अन्त:करण के ध्यान जनित सुख को प्राप्त है। अतएव हमें यदि सुख की-सच्चे सुख की चाह है तो चित्त के द्वारा निरन्तर भगवान् का चिन्तन -ध्यान करने का प्रयत्न करना पड़ेगा। भगवान् ने श्रीमद्भागवत में कहा है-

विषयान् ध्यायतश्चित्तं विषयेषु विषज्जते।
मामनुस्मरतश्चित्तं मय्येव प्रविलीयते।।

जो मनुष्य निरन्तर विषय-चिन्तन करता है, उसका चित्त विषयों में आसक्त हो जाता है और जो मेरा (भगवान् का) स्मरण करता है, उसका चित्त मुझमें (श्रीभगवान् में) तल्लीन हो जाता है एवं भगवान् के चित्त में आते ही भगवत् -कृपा से चित्तगत समस्त अशुभों, दोषों और पापों का नाश हो जाता है। श्रीमद्भागवत में कहा है-

पुंसां कलिकृतान् दोषान् द्रव्यदेशात्मसम्भवान्।
सर्वान् हरति चित्तस्थो भगवान् पुरुषोत्तमः।।
यथा हेम्नि स्थितो वह्निर्दुर्वर्णं हन्ति धातुजम्।
एवमात्मगतो विष्णुर्योगिनामशुभाशयम्।।

कलियुग के कारण मनुष्य के वस्तु, स्थान, अन्त:करण सभी में दोष उत्पन्न हो जाते हैं; परंतु जब पुरुषोत्तम श्रीहरि चित्त में आ जाते हैं, तब वे सारे दोष नष्ट हो जाते हैं। जैसे

शेष पृष्ठ 26 पर......

वेदों के मंत्र द्रष्टा ऋषि गौतम

(लेखक एंव संकलनकर्ता श्री डॉ. इन्द्रदेव शास्त्री)

परिचयात्मक समीक्षा एवं अभिमत

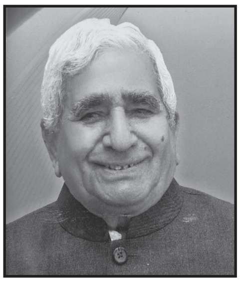

'वेद मन्त्रों के मन्त्रद्रष्टा ऋषि गौतम' ग्रंथ का लेखन एवं संकलन देश के जाने पहचाने लेखक एवं विद्वान मनीषी स्वानाम धन्य प्रो. इन्द्रदेव जी शास्त्री ने किया है। डॉ. शास्त्री वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ ख्यात विख्यात चिन्तक, उत्कृष्ट शिक्षा शास्त्री, लब्ध प्रतिष्ठित चिकित्सक एवं महान विचारक थे। वे हर कार्य उचित समय पर निष्पादित करते थे। ऐसा ही ऐतिहासिक अवसर था श्री पुष्कर गौतमाश्रम के शताब्दी समारोह के आयोजन का। आप श्री गौतमाश्रम पुष्कर के सम्मानित न्यासी थे। तीर्थराज पुष्कर पर स्थित श्री गौतमाश्रम की स्थापना के सौ वर्ष होने पर श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट ने शताब्दी समारोह के आयोजन का निर्णय लिया। आपके मस्तिष्क में इस महत्वपूर्ण अवसर पर एक ग्रंथ प्रकाशन का सुविचार आया और उसकी क्रियान्विति में संलग्न हो गये। पुष्कर तीर्थों का राज, महर्षि गौतम की यज्ञ स्थली, गुर्जर गौड़ ब्राह्मणों का प्रादुर्भाव स्थल। फिर गौतमाश्रम का शताब्दी का समारोह हो तो ऐसे पुनीत पावन प्रसंग पर डॉ. शास्त्री द्वारा प्रणीत व स्मृत्यर्थ प्रकाशित इस ग्रंथ का विमोचन सोने में सुहागा की भाँति सिद्ध हुआ।

वेदमंत्रों के मंत्रद्रष्टा गौतम: वेदों के सूक्तों में अनेक ऋषियों के नामों का उल्लेख है। ये ऋषि उन मन्त्रों के द्रष्टा है। इस अनन्त ज्ञानराशि के जानने वाले व विश्व को इस ज्ञान भंडार से अवगत करवाने वाले विद्वतजनों की नितान्त कमी है। परन्तु गुर्जर गौड़ समाज के लिए हर्ष और गौरव का विषय है कि अपने बीच आचार्य प्रवर, मर्मज्ञ विद्वान मनीषी प्रो. डॉ. इन्द्रदेव शास्त्री ने एक देदीप्यमान नक्षत्र की भांति अपनी विद्वता के आलोक से भारत भूमि को आलोकित किया है। आपने अथक प्रयास व परिश्रम से अपने आराध्य देव प्रात: स्मरणीय, सप्तऋषि मंडल में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले न्यायशास्त्र-प्रणतया अक्षपाद महर्षि गौतम जो वेदों की अनेकानेक ऋचाओं के मंत्रद्रष्टा रहे हैं, उन पर ग्रंथ रचना की है। यह आपके ग्रंथ 'वेदमन्त्रों के मंत्रद्रष्टा ऋषि गौतम' ग्रंथ का प्रतिपाद्य विषय है। शास्त्री जी ने चारों वेदों सहित वैदिक साहित्य का विस्तृत अध्ययन व अनुशीलन करने के पश्चात यत्र तत्र सर्वत्र बिखरी हुई ज्ञान राशि को संकलित कर एक दिव्य ग्रंथ का निर्माण किया है जो संस्कृत साहित्य में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है यह कहने में किंचित मात्रा भी अतिशयोक्ति नहीं है। प्रत्येक भारतीय और विशेषत: ब्राह्मण वर्ग के लिए यह ग्रंथ अत्यधिक महत्वपूर्ण, प्रमाणित एवं सर्वाधिक उपयोगी है। इस कोटि के ग्रंथों का सदैव अभाव रहा है। सुधी पाठक व ज्ञान पिपासु डॉ. शास्त्री के प्रति कृतज्ञ हैं कि उन्होंने ऐसे अमर ग्रंथ को प्रदान किया है।

वेदों में मन्त्रद्रष्टा गौतम ग्रंथ में महर्षि गौतम द्वारा दृष्ट 375 मंत्रों का चारों वेदों से संकलन किया है तथा सभी मंत्रों का सरलार्थ, भावार्थ प्रसंग सहित प्रस्तुत किया है। उद्धभट विद्वानों से लेकर सामान्य जन तक के लिए यह ग्रंथ संग्रहणीय, पठनीय और ज्ञानवर्धक है। विद्वान लेखक ने सम्पूर्ण ग्रंथ को दो विभागों में विभाजित किया है। प्रथम विभाग में वेदों के स्वरूप, महत्व, वेदमंत्रों के ऋषि, देवता, मंत्रों का यज्ञों में विनियोग, यज्ञों का विधान, मंत्रद्रष्टा ऋषि-गौतम, वैदिक ऋषियों का परिचय आदि का विस्तृत रुप से वर्णन व उल्लेख हुआ है। इससे वैदिक साहित्य की अधिकृत एवं प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है। विस्तृत एवं स्पष्ट तथा संदर्भ आदि के उल्लेख से इस ग्रंथ की उपादेयता और अधिक बढ़ जाती है। आज के युग में जब हम वेद, वेदांग, उपनिषद् आदि के अध्ययन को कठिन समझते हुए भूलते जा रहे है तब सरल, सरस, सुगम भाषा में वेदों के सारगर्भित आशय को डॉ. शास्त्री द्वारा प्रतिपादित किया जाना उल्लेखनीय है।

ग्रंथ के द्वितीय भाग में महर्षि गौतम द्वारा चारों वेदों में द्रष्ट मंत्रों का पदार्थ, भावार्थ सहित संकलन पाठकों के

शेष पृष्ठ 32 पर......

सृष्टि का आधार अग्नि

भौतिक, आध्यात्मिक व व्यावहारिक क्रिया कलापों में अग्नि का स्थान सर्वोपरि है।

सामान्य दृष्टि से अग्नि या आग उष्णता, ज्वलन या तेज का गोचर-स्वरुप (दृश्यरुप) है। अग्नि सृष्टिसृजन के पाँच मूलतत्वों में से एक प्रमुख तत्व माना गया है। ये पाँच मौलिक और आधारभूत तत्व धरती, आकाश, जल, वायु व अग्नि हैं। इन्हें सृष्टि के महाभूत भी कहा जाता है। वैदिक संहिता के अनुसार अग्नि सर्वगम्य प्रमुख देव है। यह थर्म एवं वसु का पुत्र और स्वाहा का स्वामि है। इनके पावक, पावमान और शुचि 3 पुत्र और 45 पौत्र हैं इस प्रकार अग्नि के कुल 49 स्वरुप माने गये हैं। अग्नि आठ दिग्पालों में सम्मिलित है और दक्षिण-पूर्व दिशा का अधिष्ठाता देव माना जाता है। वैदिक कर्मकाण्ड के अनुसार गार्हपात्य, आहवनीय व दक्षिणाग्नि अथवा अवस्थ्याग्नि व औपासनाग्नि तीन अग्नियाँ मानी गयी हैं। इनको भी छः उपभागों में विभाजित किया गया है। एक अन्य विभाजन के अनुसार अग्नि के तीन स्वरुप भौमाग्नि, दिव्याग्नि एवं उदराग्नि माने गये हैं। ऋग्वेद के अनुसार अग्निदेव के सात जिव्हाएं काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, उग्रा एवं प्रदीर्धा मानी गयी हैं। भिन्न-भिन्न ग्रंथों में विभाजन के भिन्न-भिन्न प्रकार एवं नामकरण हैं।

आयुर्वेद में उपापचय (Metabolism) की प्रमुख 13 अग्नियाँ मानी गयी है। - जठराग्नि यह आमाशय में पायी जाती है और जटिल खाद्यपदार्थों के सरलीकरण अर्थात पाचन का कार्य करती है। यह सम, विषम, उष्ण व तीक्ष्ण चार भागों मे उपविभाजित की गयी है। पाँच भूताग्नियाँ पार्थिव (भौमिक), आप्या (जलीय), तेजस (आग्नेय), वायवेय व आकाशीय। ये अग्नियाँ यकृत में पायी जाती हैं और अपने नाम के अनुरूप तत्वों का जैविक स्वाँगिकरण व समायोजन करती है। सात धात्विक अग्नियाँ यथाः- रसाग्नि, रक्ताग्नि, मनसाग्नि, मेदाग्नि, मज्जाग्नि, अस्थाग्नि एवं शुक्राग्नि। ये अग्नियाँ सम्पूर्ण शरीर में विभिन्न अंगतंत्रों में विद्यमान रहती है और अपने नाम के अनुरूप विभिन्न जैव रसायन क्रियाओं का विधिवत सम्पादन करती है। सम्पूर्ण प्रक्रिया अत्यन्त जटिल परन्तु स्वचालित होती है। इनमें से किसी एक में भी व्यवधान उत्पन्न हो जाय तो सम्पूर्ण जैविक तंत्र एवं समस्त सृष्टिचक्र अस्तव्यस्त हो जाएंगे।

अग्नि के असीम अर्थ और उपदेयताएं हैं। कुछ प्रमुख अर्थ इस प्रकार है :- ज्वलन, दहन, ज्वाला, होलिका, चिता, चित्रक, भिलावा, तेज, चिंगारी, प्रकाश, दावानल, बड़वानल, तड़ित, ज्वर, सोना, नींबु, मादकपेय, उमंग, उत्साह, जोश-जुनून, हिम्मत-होंसला, ललक, चिंता, आक्रोश, अवसाद, परेशानी, उलझन इत्यादि। साहित्य भी अग्नि या आग के मुहावरों से अटा पड़ा है यथा :- आग लगना/लगाना, आग से लड़ना/खेलना, आग में कूदना, अग्नि स्नान करना, आग उगलना, आग बबूला होना, आग में ईंधन डालना, आग भड़काना, डूँगर जलती आग, जंगल की आग इत्यादि। ये तो केवल कुछ प्रतीक मात्र हैं। उदाहरण व उपयोग तो अनन्त हैं।

यह निर्विवाद एवं अटल सत्य है कि, सृष्टि के समस्त सृष्टिचक्र अग्नि के बिना पूर्णतः निष्क्रिय व निरर्थक हैं। जन्तु हो या वनस्पति सबको जन्म से पँचमहाभूतों में विलिनीकरण तक अग्नि की आवश्यकता रहती है। पवन बहना, बादल बनना, वर्षा होना, कृषि, कारखाना, परिवहन, संचार और कोई भी जैविक या याँत्रिक क्रियाकलाप अग्नि बिना असम्भव हैं। आत्मीय अपनत्व, शासकीय सुव्यवस्था, सामुदायिक सहजीवितता, विकास का विस्तार और आध्यात्मिक सिद्धि साधना सभी में, जोश-जुनून, उमंग-उत्साह जैसी सकारात्मक अग्नियों का सहभागित्व सुनिश्चित है तो सुव्यस्थाओं के सर्वनाश एवं अराजकता तथा अनाचार की अभिवृद्धि के लिये काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, आक्रोश व अवसाद जैसी नकारात्मक अग्नियाँ निश्चय ही पूर्णरूप से उत्तरदायी हैं।

सृष्टि के आदि से अंत तक अग्नि अपरिहार्य आवश्यकता है। इसके बिना चराचर जगत का अस्तित्व ही नहीं कल्पना भी संभव नहीं है।

देवराज शर्मा 'देव'

सह सम्पादक

अष्टांग योग - पाँचवा, छठा, सातवां व आठवां अंग - प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि

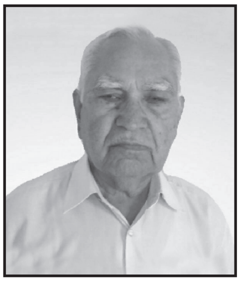

अष्टांग योग - पाँचवा अंग : प्रत्याहार

प्राणायाम के बाद योग का पाँचवा अंग है - प्रत्याहार । प्रत्याहार से तात्पर्य है इन्द्रियों को चित्त के अनुरूप करना। यह तभी सम्भव है जब इन्द्रियों का अपने अपने विषयों से सम्बन्ध टूट जाए । चित्त एक जड़ पदार्थ है क्योंकि यह जड़ प्रकृति से बना है लेकिन अज्ञानवश मनुष्य इस जड़ चित्त को चेतन मान लेता है । चेतन मानने से मनुष्य का चित्त पर पूर्ण अधिकार नहीं हो पाता । जब योगाभ्यास से इस चित्त को मनुष्य जड़ समझ लेता है और पूरी शक्ति से यम नियमों का पालन करता है तो चित्त पर अधिकार कर लेता है। दूसरे शब्दों में इसे हम यों समझ सकते हैं कि पूर्वोक्त प्रकार से प्राणायाम का अभ्यास करते करते मन और इन्द्रियां शुद्ध हो जाते हैं, उसके बाद इन्द्रियों की बाह्य वृत्ति को सब ओर से समेटकर मन में विलीन करने के अभ्यास का नाम "प्रत्याहार" है । जब साधनकाल में योगाभ्यासी इन्द्रियों के विषयों का त्याग करके चित्त को अपने ध्येय में लगाता है, उस समय जो इन्द्रियों का विषयों की ओर न जाकर चित्त में विलीन हो जाना है, यह प्रत्याहार सिद्ध होने की पहचान है । यदि उस समय भी इन्द्रियां पहले के अभ्यास से इसके सामने बाह्य विषयों का चित्र उपस्थित करती रहे तो समझना चाहिये कि प्रत्याहार सिद्ध नहीं हुआ। "यच्छेद्वांमनसी प्राज्ञः" - कठोपनिषद के इस सूत्र के अनुसार बुद्धिमान मनुष्य को उचित है कि वह वाक् आदि इन्द्रियों को बाह्य विषयों से हटाकर मन में विलीन कर दे अर्थात इनकी ऐसी स्थिति कर दे कि इनकी कोई भी क्रिया न हो - मन में विषयों की स्फुरणा न रहे।

प्रत्याहार सिद्ध हो जाने पर योगाभ्यासी की इन्द्रियां उसके सर्वथा वश में हो जाती हैं, उनकी स्वतंत्रता का सर्वथा अभाव हो जाता है । ध्यान करते समय जब किसी इन्द्रिय का बाहर के विषय के साथ सम्बन्ध जुड़ जाता है, तो चित्त की एकाग्रता भंग हो जाती है । जैसे कि ध्यान काल में श्रोत्रेन्द्रिय का शब्द के साथ सम्बन्ध होता है तो श्रोत्रेन्द्रिय चित्त को बाहर के विषय की ओर खींच लेती है, परन्तु प्रत्याहार की सिद्धि होने पर सभी इन्द्रियां चित्त के अनुसार चलती हैं । इस अवस्था में ध्यान करने वाले को कोई भी इन्द्रिय बाधित नहीं करती। इसलिये ध्यान और समाधि का ध्येय प्राप्त करने के लिये प्रत्याहार का सिद्ध होना अत्यन्त आवश्यक है ।

प्रत्याहार को सिद्ध करने के लिये शान्त, एकान्त वातावरण में मन व इन्द्रियों को रोकने का अभ्यास करना चाहिए । जहाँ पर इन्द्रियों के विषय बार बार इन्द्रियों से सम्बद्ध होते हैं, वहाँ पर प्रत्याहार की सिद्धि में कठिनाई होती है । जहाँ पर अति तीव्र ध्वनि होती है वहाँ पर प्रत्याहार की सिद्धि कठिन है । इसलिये प्रारम्भ में वहीं पर बैठकर अभ्यास करना उचित है जहाँ इन्द्रियों पर विषयों का कम से कम आक्रमण हो । विशेष अभ्यास के बाद तो इन्द्रियों के प्रबल विषयों की उपस्थिति में भी प्रत्याहार की स्थिति अच्छी बन सकती है । जो मनुष्य इन्द्रियों के विषय भोगों में दोष देखता है तथा उनकी ओर आकृष्ट नहीं होता, वही प्रत्याहार की सिद्धि कर सकता है । जो व्यक्ति विषय भोगों में सुख समझता है, वह प्रत्याहार की सिद्धि नहीं कर सकता। ईश्वर के प्रति अत्यधिक प्रेम होना भी प्रत्याहार सिद्धि के लिये अच्छा साधन है क्योंकि ईश्वर के प्रति प्रेम होने पर इन्द्रियां स्वयं विषयों की ओर नहीं जाती।

अष्टांग योग के प्रथम पाँच अंग - यम, नियम, आसन, प्रणायाम और प्रत्याहार योग के बाह्य अंग कहलाते हैं। शेष तीन - धारणा, ध्यान और समाधि योग के आन्तरिक अंग हैं।

अष्टांग योग - छठा अंग : धारणा

योग का छठा अंग है - धारणा । चित्त को किसी एक स्थान पर रोक देना "धारणा" है । "देशबन्धश्चित्तस्य धारणा" (यो. द. 3/1) के अनुसार बाहर या भीतर कहीं भी किसी एक देश में चित्त को ठहराना धारणा है । नाभिचक्र, मस्तक, हृदय-कमल आदि शरीर के भीतरी देश हैं और आकाश या सूर्य चन्द्रमा आदि देवता या कोई भी मूर्ति, चित्र, ओंकार तथा कोई भी पदार्थ बाहर के देश हैं, उनमें से किसी

एक देश में चित्त की वृत्ति को लगाने का नाम धारणा है । प्रारम्भ में जिस देश अथवा स्थान पर व्यक्ति की रुचि हो वहां पर चित्त को रोकना चाहिए । जब एक स्थान पर मन को रोकने का अभ्यास हो जाता है तो वहां से हटाकर दूसरे स्थान पर भी रोकने में सफलता मिलती है । जैसे कोई अपने मन को नाभि प्रदेश में रोकने का अभ्यास कर लेता है तो वह मन को नाभि प्रदेश से हटाकर हृदय में अथवा मस्तक में भी रोकने की क्षमता प्राप्त कर लेता है । इसलिये प्रारम्भ में तो जहाँ पर भी रुचि हो, वहीं पर धारणा का अभ्यास करना चाहिए ।

धारणा की सिद्धि होने पर लाभ यह है कि व्यक्ति अपने शुभ और अशुभ विचारों को जानने और उनमें से शुभ विचारों को ग्रहण किये रखने तथा अशुभ विचारों को छोड़ने में समर्थ हो जाता है । क्योंकि मन के साथ अच्छे बुरे दोनों प्रकार के विचारों का सम्बन्ध है अत: जब व्यक्ति अपने मन को एक स्थान पर रोक लेता है तो वह इन अच्छे बुरे दोनों विचारों को जान पाता है । जब मन स्थिर नहीं होता है तो अच्छे और बुरे विचारों का ज्ञान नहीं हो पाता । अस्थिर चित्त में जो विचार अच्छे प्रतीत होते हैं वे ही विचार स्थिर चित्त में बुरे प्रतीत हो सकते हैं । अच्छे बुरे विचारों की वास्तविकता धारणा सिद्ध होने पर ही जानी जा सकती है । स्थिर चित्त में अशुभ विचारों को हटाकर शुभ विचारों की स्थापना की जा सकती है । एक स्थान पर मन को रोकने का अभ्यास होने पर व्यक्ति बुरे विचारों से लड़ने में सफल हो जाता है । मन के चंचल रहने पर हानिकारक विचारों को रोक पाना सम्भव नहीं है। धारणा का दूसरा लाभ यह है कि धारणा सिद्ध होने पर ही व्यक्ति योग के अगले अंग ''ध्यान'' की ओर अग्रसर हो सकता है ।

अष्टांग योग - सातवां अंग : ध्यान

योग का सातवां अंग है - ध्यान । ''तत्रप्रत्ययैकतानता ध्यानम्'' (यो.द. 3/2) सूत्र के अनुसार जिस ध्येय वस्तु में चित्त को लगाया जाए, उसी में चित्त का एकाग्र हो जाना अर्थात केवल ध्येय मात्र की एक ही तरह की वृत्ति का प्रवाह चलना, उसके बीच में किसी भी दूसरी वृत्ति का न उठना ''ध्यान'' है । जहाँ पर धारणा की जाती है, वहीं पर ईश्वर आदि ध्येय में एकतानता अर्थात तारतम्य बना रहना ही ध्यान है । इस विषय में यह जान लेना आवश्यक है कि वास्तविक ध्यान क्या है । जिस वस्तु को मनुष्य प्राप्त करना चाहता है उसके विषय में शब्द प्रमाण अथवा अनुमान प्रमाण के द्वारा अच्छी प्रकार से जानना चाहिये । जैसे शब्द प्रमाण के द्वारा ईश्वर का ध्यान करना है तो वेदों और वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रन्थों में ईश्वर का जैसा स्वरूप बतलाया गया है - सच्चिदानन्द, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने वाला आदि - उसी प्रकार के ईश्वर को मन में रखकर उसे ढूंढ़ना ध्यान है । इससे भिन्न अन्य प्रकार का समझकर ढूंढ़ना ध्यान नहीं है । इसी प्रकार अनुमान प्रमाण से ईश्वर को जानकर उसका ध्यान करना उचित है । जैसे इस विशाल सृष्टि में सर्वत्र बुद्धिपूर्वक क्रिया देखी जाती है जिससे सिद्ध होता है कि कोई सर्वव्यापक, सर्वज्ञ इन क्रियाओं को करने वाला है - वही ईश्वर है -उसी को ध्यान में ढूंढना है । आँखें बन्द कर चुपचाप बैठना भी ध्यान नहीं है, क्योंकि योगदर्शन के अनुसार जिस वस्तु को प्राप्त करना हो, उस वस्तु की प्राप्ति के लिये ध्यान की एकतानता - तारतम्यता बनी रहनी आवश्यक है । केवल चुपचाप बैठने से ध्यान की एकतानता नहीं बनी रह सकती।

ध्यान करने में एक तो जिस शब्द या वाक्य या मंत्र के द्वारा ध्यान किया जाता है, उस शब्द आदि का उच्चारण भली प्रकार समझ लेना चाहिए । बिना शब्द आदि का सही उच्चारण जाने ध्यान नहीं हो सकता । दूसरे जिस शब्द या मंत्र आदि द्वारा ध्यान किया जाता है उसका अर्थ कण्ठस्थ कर लेना चाहिए । ध्यान के समय शब्द आदि के उच्चारण के साथ साथ अर्थ का विचार करना भी आवश्यक है अन्यथा ध्यान में दोष आ जाता है । इसके साथ ही ईश्वर प्रणिधान अर्थात ईश्वर समर्पण भी बनाये रखना चाहिए । इस प्रकार शब्द या मंत्र का उच्चारण, इनके अर्थ का विचार तथा ईश्वर समर्पण ये तीन कार्य ध्यान में एक साथ होने चाहिए । यदि इन तीनों में से कोई एक कार्य नहीं होता है तो समझना चाहिए कि ध्यान में दोष आ गया । प्रारम्भ में तीनों कार्य एकसाथ नहीं होते हों तो भी अभ्यास करते रहना चाहिए क्योंकि अभ्यास करते करते कालान्तर में तीनों को एक साथ करने में बाधा नहीं होती । पहले शब्द आदि का उच्चारण करना चाहिए, फिर रुककर इसके अर्थ का विचार

करना चाहिए । इसके साथ ही प्रयास करना चाहिए कि दोनों स्थितियों में अर्थात उच्चारण के समय तथा अर्थ के विचार के समय ईश्वर समर्पण बना रहे ।

ध्यान की सिद्धि से आध्यात्मिक लाभ के साथ लौकिक लाभ भी प्राप्त होते हैं । ध्यान से मन वश में हो जाता है और मन के वश में होने से लौकिक राग-द्वेष व्यक्ति को दुख नहीं दे सकते । ध्यान के अभ्यास से विद्यार्थी अपने पढ़े हुए विषय को शीघ्र ही स्मरण कर लेता है । यही नहीं, कक्षा में अध्यापक द्वारा पढ़ाते समय अपने मन को अन्य विषयों की ओर नहीं जाने देता जिससे अध्यापक द्वारा बताई गई हर बात उसे अच्छी तरह समझ में आ जाती है । जो व्यक्ति ध्यान का अभ्यास कर लेता है वह विषयासक्त नहीं होता और इसी कारण वह पापकर्मों की ओर प्रवृत्त नहीं होता । ध्यान करने वाला व्यक्ति अपने विचारों को वश में करके शीघ्र ही निद्रा लेने में सफल होता है । जब कोई लौकिक हानि हो जाती है तो सामान्य व्यक्ति उससे बहुत प्रभावित होता है और दु:ख की अनुभूति करता है, परन्तु ध्यान का अभ्यासी व्यक्ति बड़ी बड़ी हानि होने पर भी उस ओर से अपने मन को हटा लेता है और दु:ख से बच जाता है ।

ध्यान को सिद्ध करने के लिये साधक को शान्त मुद्रा में होना चाहिए और शान्त मुद्रा के लिये सबसे निष्क्रिय आसन है - सिद्धासन । सिद्धासन की मुद्रा में, जिसमें हम गौतम बुद्ध को बैठे हुए देखते हैं, शरीर गहनतम निष्क्रियता की अवस्था में होता है । निष्क्रियता में अपेक्षाकृत अधिक शान्ति होती है – कारण कि इस मुद्रा में शरीर की विद्युत ऊर्जा एक वर्तुल में घूमती है । शरीर का एक विद्युतीय वर्तुल होता है, जब वर्तुल पूरा हो जाता है तो ऊर्जा शरीर में चक्राकार घूमने लगती है, बाहर नहीं निकलती । यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध तथ्य है कि कई मुद्राओं में हमारे शरीर से ऊर्जा बाहर निकलती रहती है । जब शरीर ऊर्जा को बाहर फैंकता है तो उसे लगातार ऊर्जा पैदा करनी पड़ती है अत: शरीर सक्रिय रहता है । इस स्थिति में शरीर तंत्र को लगातार कार्य करना पड़ता है क्योंकि हम ऊर्जा बाहर फैंक रहे हैं । जब ऊर्जा शरीर से बाहर निकल रही है तो उसे पूरा करने के लिये भीतर से शरीर को सक्रिय होना पड़ता है । तो सबसे शान्त मुद्रा वह होगी जब कोई ऊर्जा बाहर नहीं निकल रही हो ।

सिद्धासन में गुरुत्वाकर्षण शक्ति न्यूनतम होती है । शरीर निष्क्रिय और क्रिया रहित होता है, भीतर से बन्द होता है । स्वयं में एक संसार बन जाता है । न कुछ बाहर जाता है, न कुछ भीतर आता है । आँखें बन्द हैं, हाथ जुड़े हुए हैं, पाँव जुड़े हुए हैं - ऊर्जा वर्तुल में गति करती है, वह एक आन्तरिक लय, एक आन्तरिक संगीत निर्मित करती है । जितना हम उस संगीत को सुनते हैं, उतने ही हम विश्रांत अनुभव करते हैं । ओशो कहते हैं -''अपने निष्क्रिय रूप को त्वचा की दीवारों का एक रिक्त कक्ष मानो - सर्वथा रिक्त। उस रिक्तता में गिरते जाओ । एक क्षण आएगा, जब तुम अनुभव करोगे कि सब कुछ समाप्त हो गया, अब कोई भी नहीं बचा, घर खाली है, घर का स्वामी मिट गया, तिरोहित हो गया । उस अंतराल में, जब तुम नहीं होओगे तो परमात्मा प्रकट होगा। जब तुम नहीं होते, आनन्द होता है । इसलिये मिटने का प्रयास करो ।''

अष्टांग योग - आठवां अंग : समाधि

योग का अन्तिम और आठवां अंग है - समाधि। ध्यान करते करते जब योगाभ्यासी ध्यान की ऊँची अवस्था में पहुँच जाता है तो वह ध्यान ही अपने स्वरूप से शून्य होकर अर्थमात्र को प्रकाशित करता है, उसको ध्येय से भिन्न उपलब्धि नहीं होती, उस समय वह ध्यान ही समाधि हो जाता है । शब्द प्रमाण तथा अनुमान प्रमाण के माध्यम से ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव का निरन्तर चिन्तन करने पर जब ईश्वर का प्रत्यक्ष होता है अर्थात ईश्वर के आनन्द में अभ्यासी निमग्न हो जाता है, तब उस अवस्था को समाधि कहते हैं ।

समाधि का फल है ईश्वर का साक्षात्कार होना। समाधि अवस्था में अभ्यासी समस्त भय, चिन्ता, बन्धन आदि दुखों से छूटकर ईश्वर के आनन्द की अनुभूति करता है तथा समाधिकाल में ईश्वर से ज्ञान, बल, उत्साह, निर्भयता आदि की प्राप्ति करता है । इसी प्रकार बारम्बार समाधि लगाकर अपने मन पर जन्म जन्मान्तर के राग-द्वेष आदि अविद्या के संस्कारों को नष्ट करके मुक्ति पद को प्राप्त कर लेता है । समाधि को प्राप्त करके जब व्यक्ति उसकी परिपक्व अवस्था में पहुँचता है तो उसकी बुद्धि का बहुत विकास होता है । बुद्धि के विकास को प्राप्त करके वह स्वयं को क्लेशों व दुखों से मुक्त देखता है । वह यह भी अनुभव

शेष पृष्ठ 25 पर......

करम प्रधान बिस्व करि राखा

श्रीरामचन्द्रजी को वन में गये छठी रात बीत रही थी। जब आधी रात हुई, तब राजा दशरथ को उस पहले के किये हुए दुष्कर्म का स्मरण हुआ। पुत्र शोक से पीड़ित हुए महाराज ने अपने उस दुष्कर्म को याद करके पुत्र शोक से व्याकुल हुई कौसल्या से इस प्रकार कहना जो आरम्भ किया। 'कल्याणि! मनुष्य शुभ या अशुभ भी कर्म करता है, भद्रे ! अपने उसी कर्मके फलस्वरूप सुख या दु:ख कर्ता को प्राप्त होते हैं ।'

कौसल्ये! पिता के जीवनकाल में जब मैं केवल राजकुमार था, एक अच्छे धनुर्धर के रूप में मेरी ख्याति फैल गयी थी। सब लोग यही कहते थे कि 'राजकुमार दशरथ शब्दवेधी बाण चलाना जानते हैं।' इसी ख्याति में पड़कर मैंने एक पाप कर डाला था।

देवि ! उस अपने ही किये हुए कुकर्म का फल मुझे इस महान् दु:ख के रूप में प्राप्त हुआ है। जैसे दूसरा कोई गँवार मनुष्य पलाश के फूलों पर ही मोहित हो उसके कड़वे फल को नहीं जानता, उसी प्रकार मैं भी 'शब्दवेधी बाण-विद्या' की प्रशंसा सुनकर उस पर लट्टू हो गया। उसके द्वारा ऐसा क्रूरतापूर्ण पाप कर्म बन सकता है और ऐसा भयंकर फल प्राप्त हो सकता है, इसका ज्ञान मुझे नहीं हुआ ।

देवि ! तब तुम्हारा विवाह नहीं हुआ था और मैं अभी युवराज ही था, उन्हीं दिनों की बात है । वर्षा- ऋतु का अत्यन्त सुखद और सुहावना समय था, मैं धनुष- बाण लेकर रथ पर सवार हो शिकार खेलने के लिये सरयू नदी के तट पर गया था। मेरी इन्द्रियाँ मेरे वश में नहीं थीं। मैंने सोचा था कि पानी पीने के लिये घाट पर रात के समय जब कोई उपद्रवकारी भैंसा, मतवाला हाथी अथवा सिंह - व्याघ्र आदि दूसरा कोई हिंसक जन्तु आयेगा तो उसे मारूँगा ।

उस समय वहाँ सब ओर अन्धकार छा रहा था । मुझे अकस्मात् पानी में घड़ा भरने की आवाज सुनायी पड़ी। मेरी दृष्टि तो वहाँ तक पहुँचती नहीं थी, किंतु वह आवाज मुझे हाथी के पानी पीते समय होने वाले शब्द के समान जान पड़ी। तब मैंने यह समझकर कि हाथी ही अपनी सूँड़ में पानी खींच रहा होगा; अत: वही मेरे बाण का निशाना बनेगा। तरकस से एक तीर निकाला और उस शब्द को लक्ष्य करके चला दिया । वह दीप्तिमान् बाण विषधर सर्प के समान भयंकर था।

वह उष: काल की वेला थी। विषैले सर्प के सदृश उस तीखे बाण को मैंने ज्यों ही छोड़ा, त्यों ही वहाँ पानी में गिरते हुए किसी वनवासी का हाहाकार मुझे स्पष्ट रूप से सुनायी दिया। मेरे बाण से उसके मर्म में बड़ी पीड़ा हो रही थी। उस पुरुष के धराशाही हो जाने पर वहाँ यह मानव-वाणी प्रकट हुई - आह! मेरे-जैसे तपस्वी पर शस्त्र का प्रहार कैसे सम्भव हुआ ? मैं तो नदी के इस एकान्त तट पर रात में पानी लेने के लिये आया था। किसने मुझे बाण मारा है ? मैंने किसका क्या बिगाड़ा था ? मैं तो सभी जीवों को पीड़ा देने की वृत्ति का त्याग करके ऋषि जीवन बिताता था, वन में रहकर जंगल फल-मूलों से ही जीविका चलाता था। मुझ-जैसे निरपराध मनुष्य का शस्त्र से वध क्यों किया जा रहा है?

मुझे अपने इस जीवन के नष्ट होने की उतनी चिन्ता नहीं है, मेरे मारे जाने से मेरे माता-पिता को जो कष्ट होगा, उसी के लिए मुझे बारम्बार शोक हो रहा है। मैंने इन दोनों वृद्धों का बहुत समय से पालन-पोषण किया है, अब मेरे शरीर के न रहने पर ये किस प्रकार जीवन-निर्वाह करेंगे ?

ये करुणा भरे वचन सुनकर मेरे मन में बड़ी व्यथा हुई। कहाँ तो मैं धर्म की अभिलाषा रखने वाला था और कहाँ यह अधर्म का कार्य बन गया। उस समय मेरे हाथों में धनुष और बाण छूटकर पृथ्वी पर गिर पड़े। रात में विलाप करते हुए ऋषिका वह करुण वचन सुनकर मैं शोक के वेग से घबरा उठा। मेरी चेतना अत्यन्त विलुप्त सी होने लगी।

मेरे हृदय में दीनता छा गयी, मन बहुत दुखी हो गया। सरयू के किनारे उस स्थान पर जाकर मैंने देखा - 'एक तपस्वी बाण से घायल होकर पड़े हैं। उनकी जटाएँ बिखरी हुई हैं, घड़े का जल गिर गया है तथा सारा शरीर धूल और खून में सना हुआ है। वे बाण से बिंधे हुए पड़े थे। उनकी अवस्था देखकर मैं डर गया, मेरा चित्त ठिकाने नहीं था।

उन्होंने दोनों नेत्रों से मेरी ओर इस प्रकार देखा, मानो अपने तेज से मुझे भस्म कर देना चाहते हो।' वे कठोर वाणी में यों बोले – 'राजन् ! वन में रहते हुए मैंने तुम्हारा कौन–सा अपराध किया था, जिससे तुमने मुझे बाण मारा ? मैं तो माता–पिता के लिए पानी लेने की इच्छा से यहाँ आया था। तुमने एक ही बाण से मेरा मर्म विदीर्ण करके मेरे दोनों अन्धे और बूढ़े माता–पिता को भी मार डाला। वे दोनों बहुत दुबले और अन्धे हैं। निश्चय ही प्यास से पीड़ित होकर वे मेरी प्रतीक्षा में बैठे होंगे। वे देर तक मेरे आगमन की आशा लगाये दु:खदायिनी प्यास लिये बाट जोहते रहेंगे।

अत: रघुकुल नरेश ! अब तुम्हीं जाकर शीघ्र ही मेरे पिता को यह समाचार सुना दो। राजन् ! यह पगडण्डी उधर ही गयी है, जहाँ मेरे पिता का आश्रम है। तुम जाकर उन्हें प्रसन्न करो, जिससे वे कुपित होकर तुम्हें शाप न दें। राजन् ! मेरे शरीर से इस बाण को निकाल दो। यह तीखा बाण मेरे मर्म स्थान को उसी प्रकार पीड़ा दे रहा है, जैसे नदी के जल का वेग उसके कोमल बालुकामय ऊँचे तट को छिन्न–भिन्न कर देता है।'

मुनिकुमार की यह बात सुनकर मेरे मन में यह चिन्ता समायी कि यदि बाण नहीं निकालता हूँ तो इन्हें क्लेश होता है और निकाल देता हूँ तो ये अभी प्राणों से भी हाथ धो बैठते हैं। इस प्रकार बाण को निकालने के विषय में मुझ दीन–दुखी और शोकाकुल दशरथ की इस चिन्ता को उस समय मुनिकुमार ने लक्ष्य दिया। यथार्थ बात को समझ लेने वाले उन महर्षि ने मुझे अत्यन्त ग्लानि में पड़ा हुआ देख बड़े कष्ट से कहा – 'राजन्! मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है। मुझसे कोई चेष्टा नहीं बन पाती। अब मैं मृत्यु के समीप पहुँच गया हूँ, फिर भी धैर्य के द्वारा शोक को रोककर अपने चित्त को स्थिर करता हूँ, अब मेरी बात सुनो – मुझसे ब्रह्महत्या हो गयी – इस चिन्ता को अपने हृदय से निकाल दो। राजन् ! मैं ब्राह्मण नहीं हूँ, इसलिये तुम्हारे मन में ब्राह्मण वध को लेकर कोई व्यथा नहीं होनी चाहिये। नरश्रेष्ठ! मैं वैश्य पिता द्वारा शूद्रजातीय माता के गर्भ से उत्पन्न हुआ हूँ।'

बाण के मर्म में आघात पहुँचने के कारण वे बड़े कष्ट से इतना ही कह सके। उनकी आँखे घूम रही थी। उनसे कोई चेष्टा नहीं बनती थी। वे पृथ्वी पर पड़े–पड़े छटपटा रहे थे और अत्यन्त कष्ट का अनुभव करते थे। इस अवस्था में मैंने उनके शरीर से उस बाण को निकाल दिया। फिर तो अत्यन्त दीन होकर उन तपोवन ने मेरी ओर देख करके अपने प्राण त्याग दिये।

पानी में गिरने के कारण उनका सारा शरीर भीग गया था। मर्म में आघात लगने के कारण बड़े कष्ट से विलाप करके और बारम्बार उच्छ्‌वास लेकर उन्होंने प्राणों का त्याग किया था। कल्याणी कौसल्ये ! उस अवस्था में सरयू के तट पर मरे पड़े मुनिपुत्र को देखकर मुझे बड़ा दु:ख हुआ।

उस महर्षि के अनुचित वध का स्मरण करके धर्मात्मा रघुकुल नरेश ने अपने पुत्र के लिये विलाप करते हुए ही रानी कौशल्या से इस प्रकार कहा – 'देवि ! अनजान में यह महान् पाप कर डालने के कारण मेरी सारी इन्द्रियाँ व्याकुल हो रही थीं। मैं अकेला ही बुद्धि लगाकर सोचने लगा, अब किस उपाय से मेरा कल्याण हो ?'

तदन्तर उस घड़े को उठाकर मैंने सरयू के उत्तम जल से भरा और उसे लेकर मुनिकुमार के बताये हुए मार्ग से उनके आश्रम पर गया। वहाँ पहुँचकर मैंने उनके दुबले, अन्धे और बूढ़े माता–पिता को देखा, जिनका दूसरा कोई सहायक नहीं था। उनकी अवस्था पंख कटे हुए दो पक्षियों के समान थी।

मेरे पैरों की आहट सुनकर वे मुनि इस प्रकार बोले – 'बेटा! देर क्यों लगा रहे हो ? शीघ्र पानी ले आओ। हम असहाय हैं, तुम्हीं हमारे सहायक हो। हम अन्धे हैं, तुम्हीं हमारे नेत्र हो। हम लोगों के प्राण तुम्हीं में अटके हुए हैं। बताओ, तुम बोलते क्यों नहीं हो ?' मुनि को देखते ही मेरे मन में भय–सा समा गया। मेरी जबान लड़खड़ाने लगी। किसी प्रकार अस्पष्ट वाणी में मैंने बोलने का प्रयास किया।

मैंने कहा – 'महात्मन्! मैं आपका पुत्र नहीं, दशरथ नाम का एक क्षत्रिय हूँ। मैंने अपने कर्मवश यह ऐसा कलंक पाया है, जिसकी सत्पुरुषों ने सदा निन्दा की है। भगवन् ! मैं धनुष बाण लेकर सरयू के तट पर आया था। मेरे आने का उद्देश्य यह था कि कोई जंगली हिंसक पशु अथवा हाथी

घाट पर पानी पीने के लिए आये तो मैं उसे मारूँ।'

थोड़ी देर बाद मुझे जल में घड़ा भरने का शब्द सुनायी पड़ा। मैंने समझा कि कोई हाथी आकर पानी पी रहा है, इसलिये उस पर बाण चला दिया। फिर सरयू के तट पर जाकर देखा कि मेरा बाण एक तपस्वी की छाती में लगा है और वे मृतप्राय होकर धरती पर पड़े है। उस बाण से उन्हें बड़ी पीड़ा हो रही थी, अत: उस समय उन्हीं के कहने से मैंने सहसा वह बाण उनके मर्म-स्थान से निकाल दिया। बाण निकलने के साथ ही वे तत्काल स्वर्ग सिधार गये। मरते समय उन्होंने आप दोनों पूजनीय अन्धे पिता-माता के लिये बड़ा शोक और विलाप किया था। इस प्रकार अनजान में मेरे हाथ से आपके पुत्र का वध हो गया है। ऐसी अवस्था में मेरे प्रति जो शाप या अनुग्रह शेष हो, उसे देने के लिए आप महर्षि मुझ पर प्रसन्न हों।'

मैंने अपने मुँह से अपना पाप प्रकट कर दिया था, इसलिये मेरी क्रूरता से भरी हुई वह बात सुनकर भी वे पूज्यपाद महर्षि मुझे कठोर दण्ड-भस्म हो जाने का शाप नहीं दे सके। उनके मुख पर आँसुओं की धारा बह चली और वे शोक से मूर्च्छित होकर दीर्घ नि:श्वास लेने लगे। मैं हाथ जोड़े उनके सामने खड़ा था।

उस समय उन महातेजस्वी मुनि ने मुझसे कहा - 'राजन्! यदि यह अपना पाप कर्म तुम स्वयं यहाँ आकर न बताते तो शीघ्र ही तुम्हारे मस्तक के सैकड़ों-हजारों टुकड़े हो जाते। नरेश्वर यदि क्षत्रिय जान-बूझकर विशेषत: किसी वानप्रस्थी का वध कर डाले तो वह वज्रधारी इन्द्र ही क्यों न हो, वह उसे अपने स्थान से भ्रष्ट कर देता है। तुमने अनजान में यह पाप किया है, इसीलिये अभी तक जीवित हो। यदि जान-बूझकर किया होता तो समस्त रघुवंशियों का कुल ही नष्ट हो जाता, अकेले तुम्हारी तो बात ही क्या है ?'

उन्होंने मुझसे यह भी कहा - 'नरेश्वर! तुम हम दोनों को उस स्थान पर ले चलो, जहाँ हमारा पुत्र मरा पड़ा है। इस समय हम उसे देखना चाहते हैं। यह हमारे लिए उसका अन्तिम दर्शन होगा।'

तब मैं अकेला ही अत्यन्त दु:ख में पड़े हुए उन दम्पती को उस स्थान पर ले गया, जहाँ उनका पुत्र काल के अधीन होकर पृथ्वी पर अचेत पड़ा था। उसके सारे अंग खून से लथपथ हो रहे थे, मृगचर्म और वस्त्र बिखरे पड़े थे। मैंने पत्नी सहित मुनि को उनके पुत्र के शरीर का स्पर्श कराया।

वे दोनों तपस्वी अपने उस पुत्र का स्पर्श करके उसके अत्यन्त निकट जाकर उसके शरीर पर गिर पड़े। फिर पिता ने पुत्र को सम्बोधित करके उससे कहा - 'अब कौन ऐसा है, जो कन्द, मूल और फल लाकर मुझ अकर्मण्य, अन्नसंग्रह से रहित और अनाथ को प्रिय अतिथि की भाँति भोजन करायेगा। बेटा! तुम्हारी यह तपस्विनी माता अन्धी, बूढ़ी, दीन तथा पुत्र के लिए उत्कण्ठित रहने वाली है। मैं स्वयं अन्धा होकर इसका भरण-पोषण कैसे करूँगा ? पुत्र ठहरो, आज यमराज के घर न जाओ। कल मेरे और अपनी माता के साथ चलना। बेटा! तुम निष्पाप हो, किन्तु एक पापकर्मा क्षत्रिय ने तुम्हारा वध किया है, इस कारण मेरे सत्य के प्रभाव से तुम शीघ्र ही उन लोकों में जाओ, जो अस्त्रयोधी शूरवीरों को प्राप्त होते हैं। बेटा! युद्ध में पीठ न दिखाने वाले शूरवीर सम्मुख युद्ध में मारे जाने पर जिस गति को प्राप्त होते हैं, उसी उत्तम गति को तुम भी जाओ। हम जैसे तपस्वियों के इस कुल में पैदा हुआ कोई पुरुष बुरी गति को नहीं प्राप्त हो सकता। बुरी गति तो उसकी होगी, जिसने मेरे बान्धवरूप तुम्हें अकारण मारा है ?'

इस प्रकार वे दीनभाव से बारम्बार विलाप करने लगे। तत्पश्चात् अपनी पत्नी के साथ वे पुत्र को जलांजलि देने के कार्य में प्रवृत्त हुए। इसी समय वह धर्मज्ञ मुनिकुमार अपने पुण्य कर्मों के प्रभाव से दिव्य रूप धारण करके शीघ्र ही इन्द्र के साथ स्वर्ग को जाने लगा।

इन्द्र सहित उस तपस्वी ने अपने दोनों बूढ़े पिता-माता को एक मुहूर्त तक आश्वासन देते हुए उनसे बातचीत की, फिर वह अपने पिता से बोला - 'मैं आप दोनों की सेवा में महान् स्थान को प्राप्त हुआ हूँ, अब आप लोग भी शीघ्र ही मेरे पास आ जायेगा।' यह कहकर वह जितेन्द्रिय मुनिकुमार उस सुन्दर आकार वाले दिव्य विमान से शीघ्र ही देवलोक को चला गया। तदनन्तर पत्नी सहित उन महातेजस्वी

तपस्वी मुनि ने तुंरत ही पुत्र को जलांजलि देकर हाथ जोड़े खड़े हुए मुझसे कहा – 'राजन्! तुम आज ही मुझे भी मार डालो, अब मरने में मुझे कष्ट नहीं होगा। मेरे एक ही बेटा था, जिसे तुमने अपने बाण का निशाना बनाकर मुझे पुत्रहीन कर दिया। तुमने प्रमादवश जो मेरे बालक की हत्या की है, उसके कारण मैं तुम्हें भी अत्यन्त भयंकर एवं भलीभाँति दु:ख देने वाला शाप दूँगा। राजन्! इस समय पुत्र के वियोग से मुझे जैसा कष्ट हो रहा है, ऐसा ही तुम्हें भी होगा। तुम भी पुत्र शोक से ही काल के गाल में जाओगे। नरेश्वर! क्षत्रिय होकर अनजान में तुमने वैश्य जातीय मुनि का वध किया है, इसलिए तुम्हें ब्रह्महत्या का पाप तो नहीं लगेगा, तथापि जल्दी ही तुम्हें भी ऐसी ही भयानक और प्राण लेने वाली अवस्था प्राप्त होगी।'

इस प्रकार मुझे शाप देकर वे बहुत देर तक करुणाजनक विलाप करते रहे; फिर वे दोनों पति-पत्नी अपने शरीरों को जलती हुई चिता में डालकर स्वर्गको चले गये।

देवि! इस प्रकार बाल स्वभाव के कारण मैंने पहले शब्दवेधी बाण मारकर और फिर उस मुनि के शरीर से बाण को खींचकर जो उनका वधरूपी पाप किया था, वह आज इस पुत्र वियोग की चिन्ता में पड़े हुए मुझे स्वयं ही स्मरण हो आया है।

देवि! अपथ्य वस्तुओं के साथ अन्नरस ग्रहण कर लेने पर जैसे शरीर में रोग पैदा हो जाता है, उसी प्रकार कल्याणि! उस उदार महात्मा का शाप-रूपी वचन इस समय मेरे पास उस पाप कर्म का फल देने के लिये आ गया है।'

[वाल्मीकीय रामायण]

❑❑❑

ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा

एक भारतीय परिवार के लोग जापान की राजधानी टोक्यो के एक होटल में ठहरे। जब वे बाजार गये तो उन्हें वहाँ आकर्षक जूते दिखायी दिये। उन्होंने बच्चे के लिये एक जोड़ी जूते खरीद लिये। होटल लौटने पर उन्हें पता चला कि जूते कहीं गिर गये।

यह सोचकर कि जूते कोई उठाकर ले गया होगा, उन्होंने जूते ढूँढ़ने का कोई प्रयास नहीं किया।

रात दस बजे होटल में उनके कमरे का दरवाजा खटखटाया गया, दरवाजा खोला तो एक पुलिस वाले को देखकर उनको आश्चर्य हुआ। उसने उस भारतीय सज्जन को जूतों का बण्डल दिखाते हुए पूछा कि 'क्या यह आपका है ?'

भारतीय सज्जन ने आश्चर्य से पूछा- 'आपको कैसे पता चला कि वे जूते हमारे हैं ?'

पुलिस वाले ने बताया कि सड़क पर पड़े जूतों को अनेक लोगों ने देखा, परंतु किसी ने उठाया नहीं। उसने बण्डल उठा लिया। खोलकर देखा तो बच्चे के जूते थे। जूतों के स्वामी का पता लगाने के लिये वह ऐसे जूते बेचने वाले दुकानदार से मिला। उसने बताया कि कुछ देर पहले उसने ये जूते एक भारतीय व्यक्ति को बेचे थे। पुलिस वाले ने कई होटलों में फोन करके भारतीय परिवार का पता लगा लिया और वह वहाँ पहुँच गया। इस प्रकार जूते उनके स्वामी तक पहुँचा दिये गये।

कृतज्ञ भारतीय ने उसे धन्यवाद देते हुए कहा – 'मैं समझ गया कि परमाणु बम के हमलों के बाद भी आज यह राष्ट्र इतना समृद्ध और विकसित क्यों है, यह आप लोगों को कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी का परिणाम है।'

❑❑❑

तुम्हारा मन किन्हीं बुरे विचारों में भटकने न पाए इसलिए उसे सदैव किसी न किसी काम में अटकाए रखो अर्थात् उसे बेकार न रहने दो।

– अर्थवेद

गंगा अवतरण का पर्व गंगा दशहरा

गंगा दशहरा हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। हर साल ज्येष्ठ माह में शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मां गंगा की पूजा-अर्चना की जाती है। इस तिथि को गंगा दशहरा या गंगावतरण भी कहा जाता है। इसी दिन मां गंगा का अवतरण पृथ्वी पर हुआ था। भारत में गंगा नदी को बहुत पवित्र माना जाता है और उन्हें माता का दर्जा प्राप्त है।

ऐसी मान्यता है कि गंगा केवल जीवनदायिनी ही नहीं बल्कि वह सभी पापों को नष्ट करती है और मोक्ष की प्राप्ति करवाती है। भारत में गंगा को मां के रूप में पूजा जाता है, 'गंगा मां' क्योंकि उनमें जीवन को बनाने, संरक्षित करने और नष्ट करने की क्षमता है, जो हिंदू त्रिदेवों ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान शक्तियों को दर्शाती है।

हर साल, भारत में करोड़ों हिंदू गंगा दशहरा मनाते हैं, ऐसा माना जाता है कि गंगा दशहरा वह दिन है जब देवी गंगा स्वर्ग से धरती पर उतरी थीं। गंगा दशहरा पर गंगा स्नान का बहुत महत्व है। कहा जाता है कि कोई भी धार्मिक कार्य गंगा जल के बिना अधूरा माना जाता है। गंगा दशहरा पर गंगा में स्नान करने से जाने-अनजाने में किए गए पापों से मुक्ति मिलती है। इस दिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु गंगा स्नान करते हैं।

गंगां वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतं ।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु मां ।।

अर्थ : गंगा का जल, जो मनोहारी है, विष्णु के श्रीचरणों से जिनका जन्म हुआ है, जो त्रिपुरारी के शीश पर विराजित हैं, जो पापहारिणी हैं, हे मां तू मुझे शुद्ध कर !

गंगा अवतरण की पौराणिक कथा :-

गंगा अवतरण की जो कथा विभिन्न पुराणों में एवं महाभारत में भी वर्णित है, वह कथा संक्षेप में यह है कि गंगा नदी को भगीरथ ने स्वर्ग (हिमालय त्रिविष्टप) से धरती पर उतारा था। मान्यता है कि गंगा श्रीहरि विष्णु के चरणों से निकलकर भगवान शिव की जटाओं (शिवालिक की जटानुमा पहाड़ी) में आकर बस गई थी। पौराणिक गाथाओं के अनुसार भगीरथी नदी गंगा की उस शाखा को कहते हैं, जो गढ़वाल (उत्तरप्रदेश) में गंगोत्री से निकलकर देवप्रयाग में अलकनंदा में मिल जाती है व गंगा का नाम प्राप्त करती है।

ब्रह्मा से लगभग 23वीं पीढ़ी बाद और राम से लगभग 14वीं पीढ़ी पूर्व भगीरथ हुए। भगीरथ ने ही गंगा को पृथ्वी पर उतारा था। इससे पहले उनके पूर्वज सगर ने भारत में कई नदी और जलराशियों का निर्माण किया था। उन्हीं के कार्य को भगीरथ ने आगे बढ़ाया। पहले हिमालय के एक क्षेत्र विशेष को देवलोक कहा जाता था। राजा सगर ने खुद को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए अश्व मेध यज्ञ का आयोजन किया। इस खबर से देवराज इन्द्र को चिन्ता सताने लगी कि कहीं उनका सिंहासन न छिन जाए।

इन्द्र ने यज्ञ के अश्व को चुराकर कपिल मुनि के आश्रम के एक पेड़ से बाँध दिया। जब सगर को अश्व नहीं मिला तो उसने अपने 60 हजार बेटों को उसकी खोज में भेजा। उन्हें कपिल मुनि के आश्रम में वह अश्व मिला। यह मानकर कि कपिल मुनि ने ही उनके घोड़े को चुराया है, वो पेड़ से घोड़े की रस्सी खोलते हुए शोर कर रहे थे। उनके शोरगुल से मुनि के ध्यान में बाधा उत्पन्न हो रही थी। जब उन्हें पता चला कि इनकी सोच है कि मैने घोड़ा चुराया है तो वे अत्यन्त क्रोधित हुए। उनकी क्रोधाग्नि वाली एक दृष्टि से ही वे सारे राख के ढेर में बदल गए।

वे सभी अन्तिम संस्कारों की धार्मिक क्रिया के बिना ही राख में बदल गए थे। इसलिए वे प्रेत के रूप में भटकने लगे। उनके एकमात्र जीवित बचे भाई आयुष्मानि ने कपिल मुनि से याचना की वे कोई ऐसा उपाय बताएँ जिससे उनके अन्तिम संस्कार की क्रियाएँ हो सकें ताकि वो प्रेत आत्मा से मुक्ति पाकर स्वर्ग में जगह पा सकें। मुनि ने कहा कि इनकी राख पर से गंगा प्रवाहित करने से इन्हें मुक्ति मिल जाएगी। गंगा को धरती पर लाने के लिए ब्रह्मा से प्रार्थना करनी होगी। कई पीढ़ियों बाद सगर के कुल के भगीरथ ने हजारों सालों तक कठोर तपस्या की। तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने गंगा को धरती पर उतारने की भगीरथ की मनोकामना पूरी कर दी।

अन्ततः भगीरथ की तपस्या से गंगा प्रसन्न हुई और उनसे वरदान माँगने के लिया कहा। भगीरथ ने हाथ जोड़कर कहा कि माता! मेरे साठ हजार पुरखों के उद्धार हेतु आप पृथ्वी पर अवतरित होने की कृपा करें। इस पर गंगा ने कहा वत्स! मैं तुम्हारी बात मानकर पृथ्वी पर अवश्य आऊँगी,

किन्तु मेरे वेग को भगवान शिव के अतिरिक्त और कोई सहन नहीं कर सकता। इसलिये तुम पहले भगवान शिव को प्रसन्न करो।यह सुन कर भगीरथ ने भगवान शिव की घोर तपस्या की और उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर शिव जी हिमालय के शिखर पर गंगा के वेग को रोकने के लिये खड़े हो गये। गंगा जी स्वर्ग से सीधे शिव जी की जटाओं पर जा गिरीं। इसके बाद भगीरथ गंगा जी को अपने पीछे-पीछे अपने पूर्वजों के अस्थियों तक ले आये जिससे उनका उद्धार हो गया। भगीरथ के पूर्वजों का उद्धार करके गंगा जी सागर में जा गिरीं और अगत्स्य मुनि द्वारा सोखे हुये समुद्र में फिर से जल भर गया।

और तब गंगा भगीरथी के नाम से धरती पर आईं। उन राख के ढेरों से गुजरते हुए गंगा ने जहनु मुनि के आश्रम को डुबो दिया। गुस्से में आकर मुनि ने गंगा को लील लिया। एक बार फिर भगीरथ को मुनि से गंगा को मुक्त करने हेतु प्रार्थना करनी पड़ी। इस तरह गंगा बाहर आईं और अब वो जाह्नवी कहलाईं। इस तरह से गंगा का धरती पर बहना शुरू हुआ और लोग अपने पाप धोने उसमें पवित्र डुबकी लगाने लगे।

व्यवहारिक सन्दर्भ :

पौराणिक कथाओं का वास्तविकता से क्या सम्बन्ध हैं और क्या वे प्रामाणिक हैं, यह प्रश्न अक्सर आम जनमानस में उठता है, परन्तु यह जानना जरुरी है की महाभारत में या पुराणों में जितनी भी कथाएं हैं वे समस्त वेदों को विस्तार देने के लिए बनाई गयी हैं जो कुछ तो बिम्बात्मक ढंग से वेद की बातों को पहुँचाने के लिए है। कुछ भारत में जो घटित हुआ उसका इस प्रकार कथानक के रूप में दिया गया कि लोग उसमे रूचि लें और जाने, उस समय कोई लिखित साहित्य नहीं होता था, या तो श्रुति ग्रन्थ होते थे या स्मृति ग्रन्थ होते थे। लिपि का आविष्कार बहुत बाद में हुआ, उसके बाद से ग्रंथों का लिपि बद्ध होना प्रारंभ हुआ।

भारत में प्रथम लिपि ब्राह्मी मानी गयी है जो कि उनके अनुसार ईसा से 600 वर्ष पूर्व अस्तित्व में आई, हम इसको स्वीकार भी कर लें तो यह मानना ही पड़ेगा कि इसके पहले का इतिहास जो लिखित नहीं था वह था तो अवश्य, इसी क्रम में पौराणिक कथाएं रोचक कहानियों में परिवर्तित हो गयी, आज भी जब हमें बच्चों को कोई बात कहनी होती है तो परियों की, जानवरों की कथाओं में परिवर्तित करके बताते हैं ताकि बच्चों की रूचि बनी रहे, ठीक वैसे ही पुरातन काल में जब कुछ लोग ही आचार्य थे वे जन जन तक उद्देश्यात्मक बातों को रुचिकर बनाने हेतु इस प्रकार कथा में गढ़ते थे।

गंगा के बारे में मान्यताएं और उनका वैज्ञानिक आधार-

गंगा की शुचिता हेतु धार्मिक आधार पर कई नियम भी बनाये गए ताकि यह अमृत सलिला कभी प्रदूषित न हो। जैसे घाटों की निरंतर सफाई, इसमें मल मूत्र त्यागने की मनाही, कुछ कार्य गंगा में ही किये जाते हैं जैसे अस्थि विसर्जन। इसके पीछे भी बहुत बड़ा वैज्ञानिक आधार माना गया है, अस्थियों में कैल्शियम होता है जो भूमि को उर्वरक बनाता है, जब गंगा के जल के साथ यह अस्थियाँ तट की भूमि पर आती है तो यह भूमि उर्वरक हो जाती है इसी लिए अस्थि विसर्जन हरिद्वार या प्रयाग में उचित माना गया है ताकि यहाँ से आगे बहने वाले पूरे कृषि क्षेत्र में गंगा जल सिंचित करती है और भूमि उर्वरक होती रहे।

वैज्ञानिक संभावनाओं के अनुसार गंगाजल में पारा अर्थात मर्करी विद्यमान होता है जिससे हड्डियों में कैल्शियम और फॉस्फोरस पानी में घुल जाता है, जो जल-जंतुओं के लिए एक पौष्टिक आहार है। वैज्ञानिक दृष्टि से हड्डियों में गंधक (सल्फर) विद्यमान होता है, जो पारे के साथ मिलकर पारद का निर्माण करता है, इसके साथ-साथ ये दोनों मिलकर मरकरी सल्फाइड सॉल्ट का निर्माण करते हैं। हड्डियों में बचा शेष कैल्शियम पानी को स्वच्छ रखने का काम करता है। धार्मिक दृष्टि से पारद शिव का प्रतीक है और गंधक शक्ति का प्रतीक है। सभी जीव अंततः शिव और शक्ति में ही विलीन हो जाते हैं।

इतना पवित्र है गंगा जल :

इसका वैज्ञानिक आधार सिद्ध हुए वर्षों बीत गए। वैज्ञानिकों के अनुसार नदी के जल में मौजूद बैक्टीरियोफेज नामक जीवाणु गंगाजल में मौजूद हानिकारक सूक्ष्म जीवों को जीवित नहीं रहने देते अर्थात ये ऐसे जीवाणु हैं, जो गंदगी और बीमारी फैलाने वाले जीवाणुओं को नष्ट कर देते हैं। इसके कारण ही गंगा का जल नहीं कभी भी सड़ता है।

भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी गंगा का धार्मिक महत्व बहुत अधिक है। इसका जल घर में शीशी या

प्लास्टिक के डिब्बे आदि में भरकर रख दें तो बरसों तक खराब नहीं होता है और कई तरह के पूजा-पाठ में इसका उपयोग किया जाता है। ऐसी आम धारणा है कि मरते समय व्यक्ति को यह जल पिला दिया जाए तो उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। गंगा जल में प्राणवायु की प्रचुरता बनाए रखने की अदभुत क्षमता है। इस कारण पानी से हैजा और पेचिश जैसी बीमारियों का खतरा बहुत ही कम हो जाता है।

गौर से देखने से ऐसा परिलक्षित होता है कि आज का भारतवर्ष और भारतीयों की प्रसन्नता सचमुच गंगा की ही देन है। मनुष्यों को मुक्ति देने वाली अतुलनीय गंगा नदी का पृथ्वी पर अवतरण ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को हुआ था ।संसार की सर्वाधिक पवित्र नदी गंगा के पृथ्वी पर आने अर्थात अवतरित होने का पर्व गंगा दशहरा है । वैसे तो प्रतिदिन ही पापमोचनी, स्वर्ग की नसैनी गंगा का स्नान एवं पूजन पुण्यदायक है और प्रत्येक अमावस्या एवं अन्य पर्वों पर भक्तगण दूर-दूर से आकर गंगा में स्नान-ध्यान, नाम-जप-स्मरण कर मोक्ष प्राप्ति की कामना करते हैं , परन्तु गंगा दशहरा के दिन गंगा में स्नान-ध्यान, दान, तप, व्रतादि की अत्यंत महिमा पुराणिक ग्रन्थों में गायी गई है ।

गंगा नदी स्नान नियम -

गंगा दशहरा पर गंगा नदी में स्नान करते समय कुछ बातों का ध्यान जरूर रखना चाहिए। ऐसा नहीं करने से अशुभ फलों की प्राप्ति होती है। आइए जानते हैं कि गंगा स्नान करते समय कौन-सी गलतियां नहीं करनी चाहिए।

- गंगा नदी में स्नान करने के बाद घर लौटकर दोबारा स्नान नहीं करना चाहिए। ऐसा करना अपशकुन माना जाता है।
- गंगा नदी के किनारे मल-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए। नदी में स्नान करने से पहले या बाद में उसमें गंदे कपड़े नहीं धोने चाहिए। यह अकाल मृत्यु का कारण भी बनता है। धार्मिक दृष्टि से यह ब्रह्महत्या के समान माना जाता है।
- गंगा नदी में स्नान समय साबुन का प्रयोग नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से आप नदी की पवित्रता को भंग करते हैं और पाप के भागी बनते हैं।
- नदी में स्नान करने के दौरान कुल्ला भी नहीं करना चाहिए। ये कार्य अशुभ माने जाते हैं, इससे व्यक्ति पाप का भागीदार बनता है।

आईये हम संकल्प लें कि जिस पवित्र अमृतमयी गंगा को भागीरथ ने हमे सौंपा था उसे उसी अवस्था में लाकर भागीरथ के प्रयासों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें। प्रदूषण ग्रषित गंगा जो हरिद्वार तक आते आते इतनी प्रदूषित हो चुकी थी कि स्नान के लायक भी नहीं थी। सरकार, संस्थाओं और जन सामान्य के सम्मिलित प्रयासों के फलस्वरूप अब जल विशेषज्ञों ने घोषित किया है कि गंगा इतनी शुद्ध हो चुकी है कि इसमें हम स्नान कर सकते हैं। अत: प्रकृति से सीख लें और हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए अपनी इस धरोहर रूपी माँ गंगा का संरक्षण करें।

❑❑❑

पृष्ठ 18 का शेष.......

करता है कि संसार में जो छोड़ने योग्य वस्तु है, उसे उसने पूर्ण रूप से जान लिया है। संसार में छोड़ने योग्य दु:ख है जिसके स्वरूप को वह ठीक प्रकार से जान पाने में समर्थ हो जाता है जबकि लौकिक व्यक्ति दुःख के स्वरूप को ठीक प्रकार से नहीं जानता ।

उपसंहार - अष्टांग योग के आठों अंगों के सविस्तार वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति योग को अपनाकर न केवल जीवनमुक्त अवस्था को प्राप्त कर लेता है वरन् दु:ख के स्वरूप को जान पाने की सामर्थ्य आ जाने के कारण दु:खों से मुक्त हो जाता है ।इसके साथ ही योग मार्ग अपनाकर व्यक्ति पूर्ण स्वस्थ जीवन जीता है, किसी भी प्रकार की शारीरिक तथा मानसिक व्याधि उसके पास नहीं फटकती । शारीरिक व मानसिक सुस्वास्थ्य की कुंजी तो उसे योग के प्रथम दो अंगों - यम और नियम के पालन से ही मिल जाती है । पाँच यम - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और पाँच नियम - शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्रणिधान, जिनका विस्तृत विवरण पूर्व में दिया जा चुका है, का यदि व्यक्ति पूर्ण ईमानदारी के साथ पालन करता है तो महर्षि पतंजलि का अष्टांग योग उसके स्वस्थ जीवन की गारन्टी देता है ।

क्रमश:

- शिवराज शर्मा, भजन गंज, अजमेर

रथ यात्रा दिवस पर विशेष

जगन्नाथ यात्रा का सांस्कृतिक महत्व

प्रत्येक वर्ष आषाढ़ माह शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि को सम्पूर्ण भारत में निकाली जाने वाली जगन्नाथ रथ यात्रा की परम्परा लगभग बारह सौ वर्ष पुरानी है । उड़ीसा के पुरी में स्थित प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर के संबध में मान्यता है कि राजा इंद्रद्युम्न ने शबर राजा से भगवान विष्णु के अवतार जगन्नाथ महाप्रभु की प्रतिमा प्राप्त कर 7वीं शताब्दी के लगभग मूल मंदिर में स्थापित की, जिसका पुनरूद्धार 12वीं शताब्दी में गंगावंश के राजा अनंतवर्मन चोड़गंगदेव ने करवाया।

उन्हीं के शासनकाल में प्रथम रथयात्रा का आयोजन हुआ। स्कंदपुराण और पुरूषोत्तम महात्म्य में भी इसका वर्णन मिलता है । गत कई वर्षों से प्रमुख तौर पर पुरी के साथ-साथ देशभर में और विदेशों में भी धार्मिक व सांस्कृतिक महत्व की रथयात्रा का आयोजन धूमधाम से किया जा रहा है । पुरी में यह यात्रा श्रीजगन्नाथ मंदिर से गुंडिचा मंदिर तक जाती है।

दस दिन चलने वाले यात्रा उत्सव में स्नान यात्रा, नेत्र उत्सव, बहुड़ा यात्रा, सुना बेशा आदि प्रमुख रीति-रिवाजों का निर्वहन होता है । प्रथम दिन जगन्नाथ महाप्रभु के साथ भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा की पवित्र लकड़ी से बनी प्रतिमाओं को भव्य हस्तनिर्मित रथों पर विराजमान कर यह यात्रा निकाली जाती है। इन मूर्तियों को प्रत्येक 12 वर्ष में बदला जाता है जिसे नव कलेवर परम्परा कहते हैं। दसवें दिन यात्रा मंदिर में लौटकर पूर्ण होती है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार ज्येष्ठ पूर्णिमा पर जगन्नाथ प्रभु का जन्मदिन होता है। इस दिन भगवान को बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ शाही स्नान कराया जाता है। स्नान से प्रभु को ज्वर हो जाता है इसलिए वे 15 दिन तक ओसरघर कहे जाने वाले विशेष कक्ष में एकांत विश्राम करते हैं । फिर प्रभु बाहर आते हैं और भाई-बहन के साथ नगर भ्रमण हेतु रथ पर सवार होकर निकलते हैं ।

पद्मपुराण के अनुसार प्रभु जगन्नाथ अपनी बहन और भाई के साथ अपनी मौसी के यहाँ गुंडिचा में जाते हैं, वहाँ बीमार होने पर कुछ दिन विश्राम के उपरान्त रथों पर सवार होकर प्रजा से मिलने जाते हैं । एक किंवदन्ती यह भी है कि श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा जब मायके आती है तो नगर भ्रमण की इच्छा व्यक्त करती है, तब बलराम और श्रीकृष्ण उन्हें रथ पर लेकर जाते हैं।

श्रीजगन्नाथ पुरी में रथ यात्रा की तैयारियां अक्षय तृतीया से आरंभ हो जाती हैं। हर वर्ष अलग सज्जा से नए बनाए जाने वाले तीनों रथ में प्रभु का रथ नंदीघोष या कपिलध्वज, बलभद्र का रथ तालध्वज और सुभद्रा का रथ पद्मध्वज कहलाता है। तीनों रथों का रंगविन्यास क्रमशः लाल-पीला, लाल-हरा और लाल-नीला होता है। रथ पवित्र नीम और हांसी वृक्ष की लकड़ी से बनाए जाते हैं, किसी कील या धातु का उपयोग नहीं होता। इन रथों के निर्माण और इनके कारीगरों के लिए भी विशिष्ट विधान निर्धारित हैं । रथों को हजारों भक्त हाथों से रस्सी के माध्यम से खींचते हैं। कहा जाता है कि रथ खींचने से हजार यज्ञ का पुण्यलाभ मिलता है।

❑❑❑

पृष्ठ 13 का शेष.......

स्वर्ण के साथ संयुक्त होकर अग्नि उसकी धातु सम्बन्धी मलिनता आदि दोषों को नष्ट कर डालती है, वैसे ही हृदय में आये हुए भगवान् विष्णु उसके समस्त अशुभ संस्कारों को नष्ट कर देते हैं।

परंतु भगवान् का चिन्तन तभी होगा, जब 'विषयों में सुख है'-यह भ्रम हमारे मन से सर्वथा निकल जायगा और यह निश्चय हो जायगा कि सुख तो एकमात्र श्रीभगवान् में ही है। किसी वस्तु का यथार्थ त्याग मनुष्य तभी करता है, जब वह समझ लेता है कि यह वस्तु सुख नहीं वरं नित्य नये-नये दु:ख ही देने वाली है। और यह दोष वैसे ही प्रत्यक्ष निश्चय के रूप में आ जाना चाहिये, जैसे हमारा यह निश्चय है कि संखिया या अफीम खाने से हमारी मृत्यु हो जायगी। बहुत बड़े धन का लालच देने पर भी मनुष्य अफीम या संखिया नहीं खाता।

❑❑❑

दसवीं पुतली प्रभावती की कथा

दसवें दिन फिर राजा भोज उस दिव्य सिंहासन पर बैठने के लिए उद्यत हुए लेकिन पिछले दिनों की तरह इस बार दसवीं पुतली प्रभावती जाग्रत हो गई और बोली, रुको राजन, क्या तुम स्वयं को विक्रमादित्य के समान समझने लगे हो? पहले उनकी तरह पराक्रमी और दयालु होकर बताओ तब ही इस सिंहासन पर बैठने के अधिकारी होंगे। सुनो, मैं तुम्हें परम प्रतापी राजा विक्रमादित्य की कथा सुनाती हूं।

एक बार राजा विक्रमादित्य शिकार खेलते-खेलते अपने सैनिकों की टोली से काफी आगे निकलकर जंगल में भटक गए। उन्होंने इधर-उधर काफी खोजा, पर उनके सैनिक उन्हें नज़र नहीं आए। उसी समय उन्होंने देखा कि एक सुदर्शन युवक एक पेड़ पर चढ़ा और एक शाखा से उसने एक रस्सी बांधी। रस्सी में फंदा बना था उस फन्दे में अपना सर डालकर झूल गया। विक्रम समझ गए कि युवक आत्महत्या कर रहा है। उन्होंने युवक को नीचे से सहारा देकर फंदा उसके गले से निकाला तथा उसे समझाया कि आत्महत्या कायरता है और अपराध भी है। इस अपराध के लिए राजा होने के नाते वे उसे दण्डित भी कर सकते हैं। युवक उनकी रोबीली आवाज तथा वेशभूषा से ही समझ गया कि वे राजा हैं, इसलिए भयभीत हो गया।

राजा ने उसे सहलाते हुए कहा कि वह एक स्वस्थ और बलशाली युवक है फिर जीवन से निराश क्यों हो गया। अपनी मेहनत के बल पर वह आजीविका की तलाश कर सकता है। उस युवक ने उन्हें बताया कि उसकी निराशा का कारण जीविकोपार्जन नहीं है और वह विपन्नता से निराश होकर आत्महत्या का प्रयास नहीं कर रहा था।

राजा ने जानना चाहा कि कौन सी ऐसी विवशता है जो उसे आत्महत्या के लिए प्रेरित कर रही है। उसने बताया कि वह कलिंगा का रहने वाला है तथा उसका नाम वसु है। एक दिन वह जंगल से गुजर रहा था कि उसकी नजर एक सुन्दर लड़की पर पड़ी। वह उसके रुप पर इतना मोहित हुआ कि उसने उससे उसी समय प्रणय निवेदन कर डाला।

उसके प्रस्ताव पर लड़की हंस पड़ी और उसने उसे बताया कि वह किसी से प्रेम नहीं कर सकती क्योंकि उसके भाग्य में प्रेम करना नहीं लिखा है। दरअसल वह एक राजकुमारी है जिसका जन्म ऐसे नक्षत्र में हुआ कि उसका पिता ही उसे कभी नहीं देख सकता। अगर उसके पिता ने उसे देखा, तो तत्क्षण उसकी मृत्यु हो जाएगी।

इसलिए उसके जन्म लेते ही उसके पिता ने नगर से दूर एक सन्यासी की कुटिया में भेज दिया और उसका पालन पोषण उसी कुटिया में हुआ। उसका विवाह भी उसी युवक से संभव है जो असंभव को संभव करके दिखा दे। उस युवक को जिसे मुझसे शादी करनी है खौलते तेल के कड़ाह में कूदकर जिन्दा निकलकर दिखाना होगा।

उसकी बात सुनकर वसु उस कुटिया में गया जहां उसका निवास था। वहां जाने पर उसने कई अस्थि पंजर देखे जो उस राजकुमारी से विवाह के प्रयास में खौलते कड़ाह के तेल में कूदकर अपनी जानों से हाथ धो बैठे थे।

वसु की हिम्मत जवाब दे गई। वह निराश होकर वहां से लौट गया। उसने उसे भुलाने की लाख कोशिश की, पर उसका रूप सोते-जागते, उठते-बैठते हर समय आंखों के सामने आ जाता है। उसकी नींद उड़ गई। उसे खाना-पीना नहीं अच्छा लगता। अब प्राणान्त कर लेने के सिवा उसके पास कोई चारा नहीं बचा।विक्रम ने उसे समझाना चाहा कि उस राजकुमारी को पाना सचमुच असंभव है, इसलिए वह उसे भूलकर किसी और को जीवन संगिनी बना ले, लेकिन युवक नहीं माना। उसने कहा कि विक्रम ने उसे व्यर्थ ही बचाया। उन्होंने उसे मर जाने दिया होता, तो अच्छा होता।

विक्रम ने उससे कहा कि आत्महत्या पाप है, और यह पाप अपने सामने वह नहीं होता देख सकते। उन्होंने उसे वचन दिया कि वे राजकुमारी से उसका विवाह कराने का हर सम्भव प्रयास करेंगे। फिर उन्होंने मां काली द्वारा प्रदत्त दोनों बेतालों का स्मरण किया। दोनों बेताल पलक झपकते ही उपस्थित हुए तथा कुछ ही देर में उन दोनों को लेकर उस कुटिया में आए जहां राजकुमारी रहती थी। वह बस कहने को कुटिया थी। राजकुमारी की सारी सुविधाओं का ख्याल रखा गया था। नौकर-चाकर थे। राजकुमारी का मन लगाने के लिए सखी-सहेलियां थीं। तपस्वी से मिलकर

शेष पृष्ठ 30 पर......

महाबली भीमसेन

भीमसेन कुंती का दूसरा पुत्र था। इसका जन्म पवन देवता के संयोग से हुआ था, इसी कारण इसमें पवन की-सी शक्ति थी। इसके उदर में वृक नामक तीक्ष्ण अग्नि थी, इसीलिए इसका नाम वृकोदर भी पड़ा। जिस समय इसका जन्म हुआ, उसी समय आकाशवाणी हुई थी कि भीमसेन वीरों में श्रेष्ठ होगा और यह बड़े-बड़े सेनानियों को पराजित करने की क्षमता रखेगा। इसकी देह वज्र के समान कठोर थी। कहा जाता है कि एक बार माता कुंती इसको गोद में लेकर बैठी थी। यह सो रहा था। उसी समय सामने से एक व्याघ्र चला आया। उसे देखकर कुंती घबराकर उठ बैठी। अचानक उठने के कारण भीम नीचे चट्टान पर गिर पड़ा, लेकिन फिर भी उसके शरीर पर किसी प्रकार की चोट नहीं आई।

वह बचपन में ही इतना पराक्रमी था कि मोटे तने वाले पेड़ों को अकेला ही हिला दिया करता था। जब कौरव वाटिका में खेलने जाते थे तो वह भी वहां पहुंच जाता था और पेड़ों पर चढ़े हुए कौरवों को पेड़ हिलाकर नीचे गिरा दिया करता था। विशेष रूप से दुर्योधन को वह बहुत ही परेशान किया करता था। इसी से दुर्योधन तथा अन्य कौरव उससे बड़ी ईर्ष्या करते थे। इसी ईर्ष्या के कारण दुर्योधन ने तो एक बार उसे मारने के लिए मिठाई में विष मिलाकर उसको खिला दिया था। इसके पश्चात दुर्योधन उसको बहकाकर जल-क्रीड़ा करने ले गया। जल के भीतर ही भीम बेहोश हो गया और पानी में डूब गया। दुर्योधन ने और ऊपर से एक लात मार दी। पाताल में जाकर वह नागकुमारी के ऊपर गिरा तो उन्होंने उसको डस लिया। इससे उसका पहले का विष उतर गया, क्योंकि एक विष दूसरे विष का असर मिटाता है। जब विष उतरने के पश्चात उसकी बेहोशी टूटी, तो वह वहां नागकुमारों को मारने-पीटने लगा। उन्होंने जाकर नागराज वासुकि से शिकायत की। नागराज ने भीमसेन को पहचान लिया और उसकी अच्छी तरह आवभगत की। नागों ने उसको अमृत दिया, जिसे पीकर वह वहां आठ दिन तक सोता रहा और फिर उठकर अपने भाइयों के पास आ गया।

जब दुर्योधन का यह उपाय भी निष्फल चला गया तो लाक्षागृह में उसने भीम तथा अन्य पाण्डवों को मारना चाहा, लेकिन यह कुचक्र भी बेकार चला गया। सभी पांडव सुरंग बनाकर आग लगने से पहले ही उस गृह से निकल गए थे। फिर अंत में महायुद्ध के समय दुर्योधन ने उसको मारना चाहा था। पुरानी ईर्ष्या के कारण ही तो उसने अपने साथ द्वंद्व युद्ध करने के लिए उसको छांटा था, लेकिन वहां भी उसका इरादा पूरा नहीं हो सका। भीमसेन ने आखिर उसका काम तमाम कर ही डाला। हां, यह अवश्य है कि यदि कृष्ण तरकीब नहीं बताते तो शायद दुर्योधन को पराजित करना बहुत कठिन पड़ता। दुर्योधन भी तो बलदाऊ का शिष्य था।

भीमसेन के पराक्रम का दूसरा उदाहरण हमें उस समय मिलता है, जब वह राक्षस हिडिंब के साथ द्वंद्व युद्ध करता है। हिडिंब बड़ा ही भयानक और पराक्रमी राक्षस था। यह भीमसेन के ही बस की बात थी कि उसको पराजित करके उसकी बहन हिडिंबा से शादी कर ली। पहले तो कुंती ने इस शादी के लिए आज्ञा नहीं दी, लेकिन हिडिंबा के प्रार्थना करने पर भीम को अनुमति मिल गई। शर्त यह थी कि एक पुत्र होते तक ही भीम उसके साथ रहेगा। हिडिंबा से पैदा हुआ घटोत्कच भी इतना पराक्रमी था कि एक बार तो इसने कौरव-सेना के छक्के छुड़ा दिए थे। उसने आकाश में आग बरसाना प्रारंभ कर दिया था। कौरव-सेना का उसने इतना भीषण विनाश किया कि कर्ण को आखिरकार उसके ऊपर इंद्र की दी हुई अमोघ शक्ति छोड़नी पड़ी, तब वह मरा। साधारण अस्त्र-शस्त्र तो उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाए।

हिडिंब राक्षस ने बाद में कितनी ही बार भीमसेन से बदला लेने की कोशिश की, लेकिन उसका सारा प्रयत्न निष्फल गया था। जिन राक्षसों को भी वह भेजता था, उन्हें ही भीम मार डालता था। एकचक्रा नगरी में रहते समय उसने बक नामक राक्षस को मारा था और इस तरह वहां के निवासियों के संकट का निवारण किया था।

गिरिव्रज में जाकर उसने जरासंध को युद्ध करके पछाड़ा था। वह महान योद्धा भी था। राजसूय यज्ञ से पहले उसने पांचाल, विदेह, गण्डक और दशार्ण प्रभृति देशों पर विजय प्राप्त करके पुलिन्ह नगर के स्वामी सुकुमार, चेदिराज,

शिशुपाल, कुमार राज्य के स्वामी श्रेणिमान, कोशल देश के राजा वृहद्बल, अयोध्यापति दीर्घयज्ञ और काशीराज सुबाहु प्रभृति से कर वसूल किया था। इसके पश्चात उत्तर दिशा पर चढ़ाई करके मोदा–गिरि और गिरिव्रज आदि के राजाओं को तथा शक, बर्बर और समुद्र तट के निवासी म्लेच्छ आदि को वश में कर लिया था।

भीमसेन बड़े ही क्रोधी स्वभाव का था। धैर्य उसमें अधिक नहीं था। परिस्थिति की गंभीरता को भी वह अधिक नहीं समझता था। जुए में सबकुछ हार चुकने के पश्चात जिस समय युधिष्ठिर चुपचाप बैठे थे और द्रौपदी का भरी सभा में अपमान किया जा रहा था तो भीमसेन से रहा नहीं गया। जब दुर्योधन ने द्रौपदी को बिठाने के लिए अपनी जांघ खोली तो भीमसेन ने पुकार कर कहा, 'हे दुष्ट दुर्योधन! मैं युद्ध में तेरी इस जांघ को तोड़ूंगा।' इसी प्रकार दु:शासन से भी उसने कहा था कि, 'दु:शासन ! आज तू हमारी पत्नी द्रौपदी को नंगी करके उसका अपमान करना चाहता है, लेकिन मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि इसके बदले तेरा सीना फाड़कर उसके भीतर से रक्त को समर–भूमि में पीऊंगा।'

भीम ने अपनी दोनों प्रतिज्ञाओं को पूरा किया। दु:शासन उसी के हाथ से मारा गया था। उसके रक्त से उसने द्रौपदी के केशों को भिगोया था। बड़ी ही क्रूर प्रवृत्ति वाला था भीम। एक बार निश्चय कर लेने के पश्चात शत्रु के प्रति दया का भाव उसके हृदय में कभी नहीं आता था। अर्जुन और युधिष्ठिर की तरह वह कभी स्वजनों की मृत्यु पर दुखी नहीं हुआ। वह प्रारंभ से कौरवों को दुष्ट हृदय समझता था और अंत तक उसकी घृणा उनके प्रति बनी रही। उसके चरित्र में दार्शनिकता बिलकुल नहीं थी। वह तो कार्य करना जानता था, उसके आगे या पीछे सोचना उसे नहीं भाता था।

अपने भाई युधिष्ठिर का वह आज्ञाकारी सेवक था। उसका विरोध उसने जीवन में कभी नहीं किया। अग्रज ने उचित–अनुचित जो कुछ भी किया, उसे ही भीम ने स्वीकार कर लिया। कठिन से कठिन परिस्थिति के सामने भी झुकना वह नहीं जानता था। बनवास के समय एक दिन द्रौपदी के सामने हवा से उड़कर एक फूल आ गिरा था। उसकी सुगंध की ओर आकर्षित होकर द्रौपदी ने भीमसेन से वैसे ही और फूल लाने के लिए कहा। यद्यपि वह उन फूलों का उत्पत्ति स्थल नहीं जानता था, लेकिन उनकी खोज में निकल पड़ा। रास्ते में हनुमान जी से भेंट हो गई। उनको न पहचान कर उसने उनके साथ एक साधारण बंदर का–सा व्यवहार किया। जब हनुमान जी ने अपना वास्तविक रूप दिखाया, तब उसने उनको प्रणाम किया। इसके पश्चात उनसे पूछकर वह कुबेर के बगीचे में पहुंचा, जहां द्रौपदी के बताए वैसे अनेक फूल खिल रहे थे। बागवानों ने मना किया और कुबेर के नाम की धमकी भी दी, लेकिन वह माना नहीं और वहां से बहुत से फूल तोड़कर द्रौपदी के पास ले आया।

द्रौपदी की भीम ने अनेक बार रक्षा की थी। एक बार जटासुर द्रौपदी को उठाकर ले गया था, तब उस असुर को मारकर भीम ने द्रौपदी की रक्षा की थी। फिर जब जयद्रथ उसको उठाकर ले गया था तो उसी ने अर्जुन के साथ मिलकर द्रौपदी को छुड़वाया था और जयद्रथ को बुरी तरह पराजित किया था। उस समय यदि युधिष्ठिर नहीं रोकता तो वह जयद्रथ को जीवित नहीं छोड़ता।

अज्ञातवास के समय भी भीम ने अपना पराक्रम दिखाया। वह उस समय वल्लभ नामधारी रसोइया था। द्रौपदी का नाम सैरंध्री था। राजा विराट का सेनापति और साला कीचक द्रौपदी को बड़ा तंग करता था। उससे क्रुद्ध होकर वल्लभ नामधारी भीम ने कीचक को मार डाला था। वह द्रौपदी की करुण अवस्था देख नहीं सका था, इसीलिए भावावेश में आकर इस काम को कर गया था, वैसे देखा जाए तो अज्ञातवास के समय यह करना उचित नहीं था।

दूसरे दिन जब सुशर्मा ने विराट के ऊपर आक्रमण कर दिया था, तो विराट उससे सामना करने गए थे। उस समय सुशर्मा के सैनिकों ने विराट को बंदी बना लिया था। जब भीम को यह पता चला तो भाइयों को लेकर वह युद्ध–स्थल पहुंचा और उसने सुशर्मा को बुरी तरह मारकर राजा विराट को मुक्त करा लिया।

भीम के पराक्रम के संबंध में धृतराष्ट्र के वाक्य सुनने योग्य हैं। धृतराष्ट्र ने इसके पराक्रम से भयभीत होकर एक बार कहा था, 'भीमसेन के भय के मारे मुझे रात को नींद नहीं आती। इंद्र तुल्य तेजस्वी भीम का सामना कर सकने वाला एक आदमी भी मुझे अपनी ओर दिखाई नहीं पड़ता। वह बड़ा उत्साही, क्रोधी, उद्दण्ड, टेढ़ी नजर से देखने वाला

और कठोर स्वर वाला है। न तो वह कभी साधारण रूप में हंसी-दिल्लगी करता है और न कभी वैर को ही भूलता है। एकाएक वह कुछ भी कर बैठता है। अपने प्रतिशोध की आग को शांत करने के लिए वह कठिन से कठिन और क्रूर से क्रूर कार्य करने को तत्पर हो जाता है। उससे मेरे पुत्रों को बड़ा भय है। व्यास जी ने मुझे बताया है कि अद्वितीय शूर और बली भीमसेन गोरे रंग का, ताड़ के वृक्ष जैसा ऊंचा है। वह वेग में घोड़े से और बल में हाथी से बढ़कर है।'

धृतराष्ट्र के इस कथन से भीम के चरित्र पर काफी प्रकाश पड़ता है। यह तो उसके बारे में सत्य है कि भावावेश ही उसमें अधिक था। बुद्धि का प्रयोग वह कम ही करता था। यद्यपि वनवास भोगने के लिए वह अग्रज के साथ कष्टपूर्ण जीवन बिताता रहा, लेकिन जब उसको युधिष्ठिर पर क्रोध आया तो वह बिना किसी हिचकिचाहट के कहने लगा, 'भाई ! राजा लोग जो धन आपको भेंट में दे गए थे, वह सब आपने दांव पर लगा दिया। धन-धान्य को ही नहीं, बल्कि हम सभी को भी आपने जुए में दांव पर लगा दिया। आपकी इस सारी बात को मैंने चुपचाप सह लिया और वह भी इसलिए कि आप हमारे अग्रज हैं, लेकिन अब द्रौपदी को इस तरह भरी सभा में अपमानित होते मैं नहीं देख सकता। आप इसे चुपचाप बैठकर सह रहे हैं? क्या आपका हृदय नहीं है? जुआरियों के घर में वेश्याएं होती हैं, उन्हें भी वे दांव पर नहीं लगाते, लेकिन आपका व्यवहार तो निराला है, जो आपने अपनी पत्नी तक को अपमानित होने के लिए दांव पर लगा दिया है। मैं इसको कभी सहन नहीं कर सकता। जिन हाथों से आपने यह जुआ खेला है और यह सर्वनाश किया है, उन्हीं को मैं जला दूंगा।' यह कहकर उसने सहदेव को आग लाने के लिए आज्ञा दी। वह सचमुच ही युधिष्ठिर के हाथों को जलाने के लिए उतारू हो गया था। यह उसका भावावेश ही था।

वह पूरी तरह सरल स्वभाव का व्यक्ति था। छल-कपट में वह विश्वास नहीं करता था। बात को सीधे कहने में ही उसका विश्वास था। पुत्रों के मारे जाने पर धृतराष्ट्र जब युधिष्ठिर के आश्रम में रहकर जी खोलकर दान-पुण्य किया करते थे तो भीमसेन कभी-कभी एकाध लगती हुई बात कह देता था। बात कहकर वह इस बात की परवाह नहीं करता था कि वृद्ध धृतराष्ट्र के हृदय पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा।

इस तरह हम देखते हैं कि भीमसेन के चरित्र की महानता उसकी सरल हृदयता में है। उसका पराक्रम तो बड़े-बड़े योद्धाओं को चकित कर देता है। आठ बार उसने द्रोणाचार्य के रथों को उठाकर तोड़ डाला था। जब कभी वह सेना के बीच मारकाट करता निकल जाता था तो ऐसा लगता था, मानो कोई सिंह साधारण प्राणियों के बीच घुस आया हो। अपनी गदा के प्रहारों से वह कुछ ही क्षणों में असंख्य सैनिकों को पृथ्वी पर सुला देता था।

❑❑❑

पृष्ठ 27 का शेष.......

विक्रमादित्य ने वसु के लिए राजकुमारी का हाथ मांगा। तपस्वी ने राजा विक्रमादित्य का परिचय पाकर कहा कि अपने प्राण वह राजा को सरलता से अर्पित कर सकता है, पर राजकुमारी का हाथ उसी युवक को देगा जो खौलते तेल से सकुशल निकल आए। बस यह शर्त पूरी होनी चाहिए।

राजा विक्रम ने उसे बताया कि वे खुद ही इस युवक के स्थान पर कड़ाह में कूदने को तैयार हैं तो तपस्वी का मुंह विस्मय से खुला रह गया। तभी राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ वहां आई। वह सचमुच अप्सराओं से भी ज्यादा सुन्दर थी।

खैर, विक्रम ने तपस्वी से कहकर कड़ाह भर तेल की व्यवस्था करवाई। जब तेल एकदम खौलने लगा, तो मां काली को स्मरण कर विक्रम तेल में कूद गए। खौलते तेल में कूदते ही उनके प्राण निकल गए और शरीर भुनकर स्याह हो गया। मां काली अपने भक्त को इस तरह कैसे मरने देती। उन्होंने बेतालों को विक्रम को जीवित करने की आज्ञा दी। बेतालों ने अमृत की बून्दें उनके मुंह में डालकर उन्हें जिंदा कर दिया। जीवित होते ही उन्होंने वसु के लिए राजकुमारी का हाथ मांगा। राजकुमारी के पिता को खबर भेज दी गई और दोनों का विवाह धूम-धाम से सम्पन्न हुआ।

इतना कहकर प्रभावती खामोश हो गई। राजा भोज समझ गए कि विक्रम के इस अतुलनीय त्याग का उनके पास कोई जवाब नहीं है। और लौट गए अपने कक्ष की तरफ। अगले दिन 11वीं पुतली त्रिलोचना ने रोका राजा को और सुनाई विक्रमादित्य की सुंदर कथा।

❑❑❑

पंचतंत्र से प्रेरक कहानी

झगड़ालू मेंढक

एक कुंए में बहुत से मेंढक रहते थे। उनके राजा का नाम था गंगदत्त। गंगदत्त बहुत झगड़ालू स्वभाव का था। आसपास दो तीन और भी कुंए थे। उनमें भी मेंढक रहते थे। हर कुंए के मेंढकों का अपना राजा था। हर राजा से किसी न किसी बात पर गंगदत्त का झगड़ा चलता ही रहता था। वह अपनी मूर्खता से कोई गलत काम करने लगता और बुद्धिमान मेंढक रोकने की कोशिश करता तो मौका मिलते ही अपने पाले गुंडे मेंढकों से पिटवा देता। कुंए के मेंढकों में भीतर ही भीतर गंगदत्त के प्रति रोष बढता जा रहा था। घर में भी झगडों से चैन न था। अपनी हर मुसीबत के लिए दोष देता।

एक दिन गंगदत्त पड़ौसी मेंढक राजा से खूब झगड़ा। खूब तू-तू मैं-मैं हुई। गंगदत्त ने अपने कुंए आकर बताया कि पड़ौसी राजा ने उसका अपमान किया है। अपमान का बदला लेने के लिए उसने अपने मेंढकों को आदेश दिया कि पड़ौसी कुंए पर हमला करें। सब जानते थे कि झगडा गंगदत्त ने ही शुरु किया होगा। कुछ सयाने मेंढकों तथा बुद्धिमानों ने एकजुट होकर एक स्वर में कहा ''राजन, पड़ौसी कुंए में हमसे दुगने मेंढक हैं। वे स्वस्थ व हमसे अधिक ताकतवर हैं। हम यह लड़ाई नहीं लडेंगे।''

गंगदत्त सन्न रह गया और बुरी तरह तिलमिला गया। मन ही मन में उसने ठान ली कि इन गद्दारों को भी सबक सिखाना होगा। गंगदत्त ने अपने बेटों को बुलाकर भड़काया ''बेटा, पड़ौसी राजा ने तुम्हारे पिताश्री का घोर अपमान किया है। जाओ, पड़ौसी राजा के बेटों की ऐसी पिटाई करो कि वे पानी मांगने लग जाएं।''

गंगदत्त के बेटे एक दूसरे का मुंह देखने लगे। आखिर बड़े बेटे ने कहा ''पिताश्री, आपने कभी हमें टर्राने की इजाजत नहीं दी। टर्राने से ही मेंढकों में बल आता है, हौसला आता है और जोश आता है। आप ही बताइए कि बिना हौसले और जोश के हम किसी की क्या पिटाई कर पाएंगे?''

अब गंगदत्त सबसे चिढ गया। एक दिन वह कुढता और बडबडाता कुंए से बाहर निकल इधर-उधर घूमने लगा। उसे एक भयंकर नाग पास ही बने अपने बिल में घुसता नजर आया। उसकी आंखें चमकी। जब अपने दुश्मन बन गए हों तो दुश्मन को अपना बनाना चाहिए। यह सोच वह बिल के पास जाकर बोला ''नागदेव, मेरा प्रणाम।''

नागदेव फुफकारा ''अरे मेंढक मैं तुम्हारा बैरी हूं। तुम्हें खा जाता हूं और तू मेरे बिल के आगे आकर मुझे आवाज दे रहा है।''

गंगदत्त टर्राया ''हे नाग, कभी-कभी शत्रुओं से ज्यादा अपने दुख देने लगते हैं। मेरा अपनी जाति वालों और सगों ने इतना घोर अपमान किया है कि उन्हें सबक सिखाने के लिए मुझे तुम जैसे शत्रु के पास सहायता मांगने आना पडा है। तुम मेरी दोस्ती स्वीकार करो और मजे करो।'' नाग ने बिल से अपना सिर बाहर निकाला और बोला ''मजे, कैसे मजे?'' गंगदत्त ने कहा ''मैं तुम्हें इतने मेंढक खिलाऊंगा कि तुम मुटाते-मुटाते अजगर बन जाओगे।''

नाग ने शंका व्यक्त की ''पानी में मैं जा नहीं सकता। कैसे पकडूंगा मेंढक?'' गंगदत्त ने ताली बजाई ''नाग भाई, यहीं तो मेरी दोस्ती तुम्हारे काम आएगी। मैंने पड़ौसी राजाओं के कुंओं पर नजर रखने के लिए अपने जासूस मेंढकों से गुप्त सुरंगें खुदवा रखी हैं। हर कुंए तक उनका रास्ता जाता हैं। सुरंगें जहां मिलती हैं वहां एक कक्ष है। तुम वहां रहना और जिस-जिस मेंढक को खाने के लिए कहूं, उन्हें खाते जाना।''

नाग गंगदत्त से दोस्ती के लिए तैयार हो गया। क्योंकि उसमें उसका लाभ ही लाभ था। एक मूर्ख बदले की भावना में अंधे होकर अपनों को दुशमन के पेट के हवाले करने को तैयार हो तो दुश्मन क्यों न इसका लाभ उठाए?

नाग गंगदत्त के साथ सुरंग के कक्ष में जाकर बैठ गया। गंगदत्त ने पहले सारे पड़ौसी मेंढक राजाओं और उनकी प्रजाओं को खाने के लिए कहा। नाग कुछ सप्ताहों में सारे

दूसरे कुंओं के मेढकों को सुरंगों के रास्ते जा-जाकर खा गया। जब सब समाप्त हो गए तो नाग गंगदत्त से बोला ''अब किसे खाऊं? जल्दी बता। चौबीस घंटे पेट फुल रखने की आदत पड गई है।''

गंगदत्त ने कहा ''अब मेरे कुंए के सभी स्यानों और बुद्धिमान मेंढकों को खाओ।'' वह खाए जा चुके तो प्रजा की बारी आई। गंगदत्त ने सोचा ''प्रजा की ऐसी तैसी। हर समय कुछ न कुछ शिकायत करती रहती है। उनको खाने के बाद नाग ने खाना मांगा तो गंगदत्त बोला ''नागमित्र, अब केवल मेरा कुनबा और मेरे मित्र बचे हैं। खेल खत्म और मेंढक हजम।''

नाग ने फन फैलाया और फुफकारने लगा ''मेंढक, मैं अब कहीं नही जाने का। तू अब खाने का इंतजाम कर वर्ना हिस्स।'' गंगदत्त की बोलती बंद हो गई। उसने नाग को अपने मित्र खिलाए फिर उसके बेटे नाग के पेट में गए। गंगदत्त ने सोचा कि मैं और मेंढकी जिन्दा रहे तो बेटे और पैदा कर लेंगे। बेटे खाने के बाद नाग फुफकारा ''और खाना कहां है? गंगदत्त ने डरकर मेंढकी की ओर इशारा किया। गंगदत्त ने स्वयं के मन को समझाया ''चलो बूढी मेंढकी से छुटकारा मिला। नई जवान मेंढकी से विवाह कर नया संसार बसाऊंगा।''

मेंढकी को खाने के बाद नाग ने मुंह फाडा ''खाना।'' गंगदत्त ने हाथ जोडे ''अब तो केवल मैं बचा हूं। तुम्हारा दोस्त गंगदत्त। अब लौट जाओ। नाग बोला ''तू कौन-सा मेरा मामा लगता है और उसे हडप गया।''

सीख : अपनों से बदला लेने के लिए जो शत्रु का साथ लेता है उसका अंत निश्चित है।

❑❑❑

पृष्ठ 14 का शेष.......

लिए अति सरल एवं रुचिकर है। यह ग्रंथ समाज के लिए बहुत उपयोगी, मार्गदर्शक, निर्देशक व ज्ञानाभिवृद्धि में सर्वाधिक सहायक सिद्ध होगा, यह हमारा दृढ़मत है। वेदों की व्याख्या, भाष्य व समीक्षा तथा महर्षि गौतम के कृतित्व व व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने वाले अनेकानेक ग्रंथ उपलब्ध है। परन्तु डॉ. शास्त्री द्वारा प्रणीत यह ग्रंथ बेजोड़ है और अपने आप में अपूर्व है। डॉ. शास्त्री का सृजनात्मक गुण, गंभीर स्वाध्याय, अनुपम लेखन शैली, विचारोत्तेजक भाषा के कारण एक स्थापित लेखक, समीक्षक, विचारक और चिन्तक मनीषी के रुप में दिव्य व भव्य स्वरूप हमारे सामने समुपस्थित होता है। हम ऐसे लेखक की गरिमा व आलोक मंडल से स्वयं भी आलोकित हुए बिना नहीं रह सकते।

सम्मानीय प्रो. डॉ. इन्द्रदेव शास्त्री की सम्पूर्ण योजना को क्रियान्वित करने में उनके परम सहयोगी, सुप्रसिद्ध समाजसेवी, प्रख्यात व्यवसायी श्री रामनाथ जी उपाध्याय का उल्लेखनीय सहयोग रहा है। श्री रामनाथ जी उपाध्याय गुर्जर गौड़ के जाने पहचाने हस्ताक्षर है। देश की किसी भी सुदूर कोने में समाज का सम्मेलन हो, कोई कार्यक्रम हो, सामूहिक विवाह हो या परिचय सम्मेलन हो, श्री रामनाथ जी मुस्कुराहट बिखेरते हुए धवल वस्त्रों में अवश्य दृष्टिगोचर हो ही जाते थे। स्थानीय इकाई से लेकर अखिल भारतीय स्तर तक, पुष्कर से लेकर हरिद्वार तक, पाली से लेकर हैदराबाद तक सक्रिय परन्तु विनम्र कार्यकर्ता के रुप में अपनी निराली पहचान रखते हैं। उन्होंने इस ग्रंथ के प्रकाशन का बीड़ा उठाया और प्रकाशित कर दिया, जो स्वागत योग्य है।

'वेद मन्त्रों के मन्त्रदृष्टा ऋषि गौतम' ग्रंथ के लेखक व संकलनकर्ता प्रो. डॉ. इन्द्रदेव जी शास्त्री प्रकाशक श्री रामनाथ मोतीलाल जी उपाध्याय (हैदराबाद) को हम अखिल भारतवर्षीय श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण महासभा तथा श्री पुष्कर गौतमाश्रम शताब्दी समारोह का आयोजक होने के नाते पुष्कर ट्रस्ट समिति की तरफ से हार्दिक बधाई, धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित करते हैं।

- सीताराम जोशी

शर्मा परिवार की ओर से
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्रीकान्त शर्मा, संदीप, प्रदीप, मुदित, तनिश, चार्विक
एवं समस्त शर्मा परिवार

Mateshwari Textile
Mateshwari Enterprises
Mateshwari Creation

Specialist in

All Type of Printing, Dyeing Export Garment,
Domestic Fabrics Printed Garment,
Fabrics Scarves, Stoles, Pario, Bandana etc.

E-225-A, MIA, Phase 2, Road No. 6, Basni, Jodhpur
Mob. : 9414140460, 8854099000, 9414002360
E-mail : sksmt007@gmail.com

Bhaghya Overseas

All type of
Handicrafts Goods in Iron &
Wooden Furniture
(Exports & Domestic)

KHASRA NO. 115, SALAWAS BORANDA ROAD, JODHPUR
Mob. : 9982551856 • E-mail : sandeep171987@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

जवाहरलाल उपाध्याय
संगठन मंत्री, महासभा
ट्रस्टी गौतमाश्रम पुष्कर
ट्रस्टी गौतमाश्रम हरिद्वार
उपाध्यक्ष गौतमाश्रम त्र्यंबकेश्वर
ट्रस्टी अ.भा.म.गौ.शै.पा. न्यास

J L Builders

JDH HARDWARE

जेडी हार्डवेयर

रवि उपाध्याय

गौरव उपाध्याय

गर्वित उपाध्याय

जवाहरलाल उपाध्याय

'गौरव' 76बी, मानसरोवर, शंकर नगर, जोधपुर- 342008 (राज.)

मो. 94141-30222, 96108-30222, 94147-53555, 96601-78191

श्रीमान्

प्राप्त नहीं करने पर निम्न पते पर वापस भेजें :
SHRI PUSHKAR GAUTAM ASHRAM
Pushkar-Ajmer (Raj.)

मुद्रक : श्री आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर फो. 9414336820